CHAMPION SQUARE
Be the champion with us for civil services

Coming Soon...

मध्यप्रदेश

सामान्य अध्ययन

मध्यप्रदेश की गीता

FREE Exam Boosters
- जनजाति चार्ट
- गीता सार संग्रह
- इकोनॉमी फाइल

मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी
की पुस्तकों के तथ्यों का समावेशन

नित्या पब्लिकेशन



MPPSC | MPESB | MPSI | AP

« मध्यप्रदेश की सभी परीक्षाओं हेतु उपयोगी »



ऋषभ सर
लेखक

सुनील सर
मार्गदर्शक (म.प्र. वित्त सेवा)

क्यों MPGK = चैंपियन की 'म.प्र. की गीता'?

1 सरल • सटीक • प्रामाणिक

परीक्षोपयोगी तथ्यों का सहज एवं व्यवस्थित संकलन।

2 जगह-जगह PYQs

हर टॉपिक के साथ संबंधित विगत वर्षों के प्रश्न।

3 सबसे खास :- आपका साथी QR

QR स्कैन करें और उसी टॉपिक पर पाएं

PYQs का वीडियो विश्लेषण	Practice Questions
याद रखने की Tricks	नवीनतम Current Updates

4 किताब के साथ निःशुल्क पाएं

Economy File	जनजाति Chart :- Synopsis	गीता सार :- Synopsis

पढ़ें किताब से • समझें QR से • अभ्यास करें PYQs से • अपडेट रहें Current से

MCQs, PYQs, Tricks और Updates के लिए Scan करें



Rishabh Sir
Author

Sunil Sir (M.P. Finance Service)
Mentor





CHAMPION SQUARE
Be the champion with us for civil services

मध्य प्रदेश : सामान्य परिचय

- मध्यप्रदेश भारत के मध्य में स्थित एक स्थलरुद्ध (Landlocked) राज्य हैं, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, गौरवशाली ऐतिहासिक स्थलों और विविधधतापूर्ण वन्य जीवों के लिए प्रसिद्ध है।
- मध्य प्रदेश को **"भारत का हृदय प्रदेश"** भी कहा जाता है।
- मध्यप्रदेश का गठन **1 नवम्बर 1956** को हुआ था तथा इसकी राजधानी **भोपाल** को बनाया गया।
- मध्यप्रदेश में गठन के समय **7 संभाग** तथा **43 जिले** थे। वर्तमान में मध्यप्रदेश में **10 संभाग** तथा **55 जिले** हैं।



मध्यप्रदेश के राजकीय प्रतीक



राजकीय चिह्न

चौबीस स्तूपों की आकृति
(विकास का प्रतीक)

- **मध्य प्रदेश शासन, सत्यमेव जयते** और **गेहूँ-धान की बालियां** अंकित हैं।
- केंद्रीय वृत्त में **अशोक स्तंभ** और **राज्य वृक्ष बरगद** दर्शाया गया है।



राजकीय पक्षी

दूधराज / शाह बुलबुल

- **वैज्ञानिक नाम** :- टेपरसीफोन पैराडाइजि।
- **घोषित** :- 1981 में राजकीय पक्षी घोषित।
- यह पक्षी सैलाना अभयारण्य (रतलाम) और सरदारपुर अभयारण्य (धार) में पाया जाता है।



मध्यप्रदेश गान

"सुख का दाता सबका साथी..."

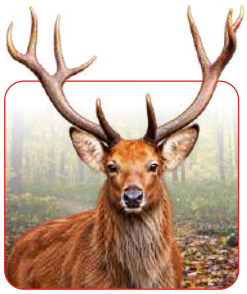
- **लेखक** :- श्री महेश श्रीवास्तव
- **गायक** :- शांतनु मुखर्जी (शान)
- **घोषित** :- 26 जुलाई 2011
- **संगीतकार** :- श्री सुनील झा



राजकीय वृक्ष

बरगद

- **वैज्ञानिक नाम** :- फाइकस बेंघालेंसिस।
- **घोषित** :- 1981 में राजकीय वृक्ष घोषित।
- **मध्य भारत का पहला फाइकस पार्क**:- बड़गोंदा, इंदौर



राजकीय पशु

बारहसिंगा (दलदली हिरण)

- **वैज्ञानिक नाम** :- रूसर्वस डुबाउसेली (प्रजाति - ब्रेडरी प्रजाति)।
- **घोषित** :- 1981 में राजकीय पशु घोषित।
- मुख्यत: कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान में पाया जाता है।



राजकीय पुष्प

सफेद लिली

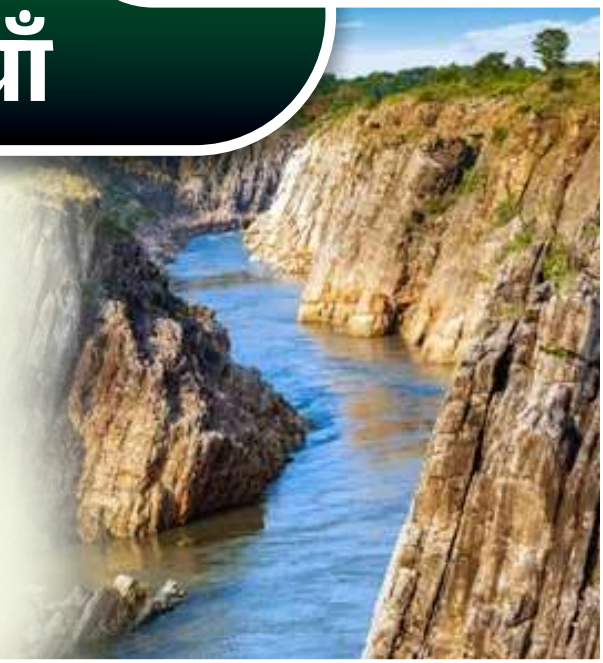
- **वैज्ञानिक नाम** :- लिलियम कैंडीडम
- **फैमिली** :- लिलिएसी

MCQs, PYQs, Tricks और Updates के लिए Scan करें






मध्य प्रदेश की नदियाँ



- भारत के हृदय प्रदेश में स्थित मध्य प्रदेश अपनी अद्वितीय भौगोलिक स्थिति, समृद्ध जैव विविधता और विपुल प्राकृतिक संसाधनों के लिए जाना जाता है।
- इस प्राकृतिक वैभव की आधारशिला यहाँ का समृद्ध अपवाह तंत्र (Drainage System) है।
- अनेक प्रमुख नदियाँ मध्य प्रदेश से उद्गमित होकर देश के विभिन्न भागों को जल प्रदान करती हैं, इसलिए मध्यप्रदेश को **'नदियों का मायका'** (Cradle of Rivers) कहा जाता है।

नदियों से जुड़ी प्रमुख भौगोलिक परिभाषाएँ

उद्गम

- वह स्थान जहाँ से किसी नदी का प्रवाह प्रारंभ होता है, नदी का उद्गम कहलाता है।

मुहाना

- वह स्थान जहाँ नदी समुद्र, झील अथवा किसी अन्य बड़े जल निकाय में मिलती है, मुहाना कहलाता है।

सहायक नदी

- वह नदी जो किसी मुख्य नदी में आकर मिलती है, सहायक नदी कहलाती है।

अपवाह तंत्र

- मुख्य नदी एवं उसमें मिलने वाली सहायक नदियों के संयुक्त जाल को अपवाह तंत्र कहते हैं।

अपवाह द्रोणी

- मुख्य नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित संपूर्ण भू-क्षेत्र को अपवाह द्रोणी कहते हैं।

जल विभाजक

- दो अपवाह द्रोणियों को अलग करने वाली उच्च भूमि को जल विभाजक कहते हैं।

नदी घाटी

- नदी के प्रवाह एवं अपरदन द्वारा निर्मित लंबे एवं निम्न भू-भाग को नदी घाटी कहते हैं।

डेल्टा

- नदी के मुहाने पर अवसादों के निक्षेप से निर्मित त्रिकोणीय अथवा पंखाकार भू-आकृति को डेल्टा कहते हैं।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

ज्वारनदमुख

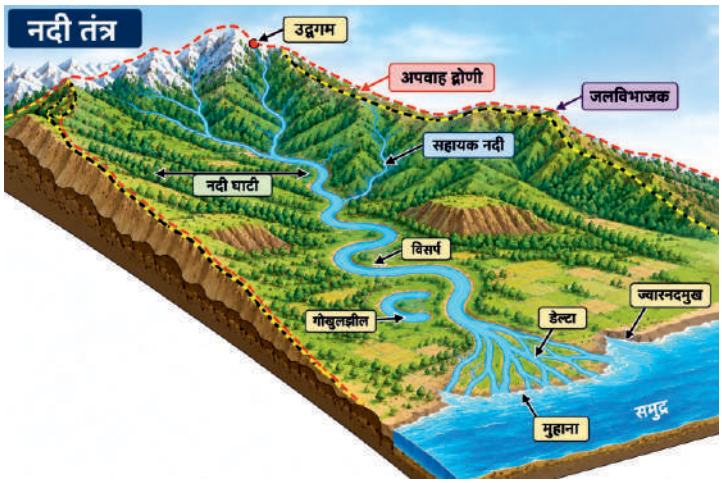
- नदी का वह चौड़ा एवं गहरा ज्वार-प्रभावित मुहाना, जहाँ तीव्र ज्वारीय क्रिया के कारण अवसादों का पर्याप्त जमाव नहीं हो पाता और नदी समुद्र में मिलती है, ज्वारनदमुख कहलाता है।

विसर्प

- मैदानी क्षेत्रों में नदी के प्रवाह के दौरान पार्श्व अपरदन एवं निक्षेपण के कारण बनने वाले घुमावदार मोड़ों को विसर्प कहते हैं।

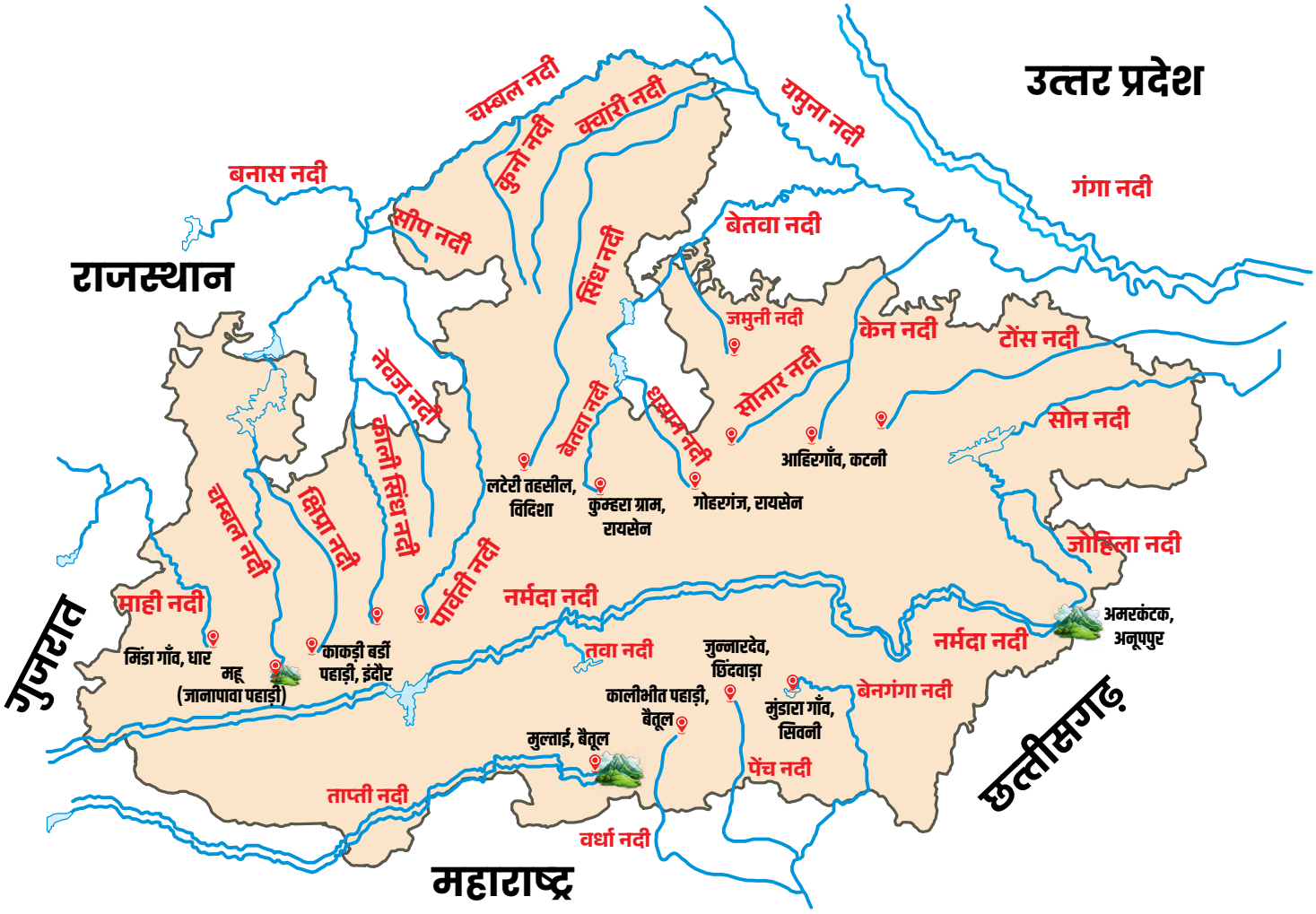
गोखुर झील

- नदी के अत्यधिक विकसित विसर्प के मुख्य धारा से कटकर अलग हो जाने पर निर्मित अर्धचंद्राकार झील को गोखुर झील कहते हैं।



नन्दू फैक्ट्स

मध्यप्रदेश आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 के अनुसार, प्रदेश में नदियों की कुल लंबाई लगभग 3,956 किमी है, जिसमें से लगभग 553 किमी लंबाई में नदियाँ मध्यप्रदेश की सीमा अन्य राज्यों के साथ निर्धारित करती हैं।



CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

माही अपवाह तंत्र

- माही नदी एवं उसकी सहायक नदियों से निर्मित नदी तंत्र
- मध्यप्रदेश में इसका अपवाह क्षेत्र मुख्यतः धार, झाबुआ एवं रतलाम जिलों में विस्तृत है।
- माही नदी का कुल अपवाह क्षेत्र लगभग 38,699 वर्ग किमी है, जिसमें से लगभग 7,188 वर्ग किमी क्षेत्र मध्यप्रदेश में स्थित है।
- **प्रमुख नदियाँ** :- माही एवं इसकी सहायक नदियाँ - सोम, जाखम, अनास, पानम आदि।
- मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग एवं दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में माही नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को छप्पन का मैदान कहा जाता है।

गोदावरी अपवाह तंत्र

- गोदावरी एवं उसकी सहायक नदियों से निर्मित नदी तंत्र
- मध्यप्रदेश में इसका अपवाह क्षेत्र मुख्यतः दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्वी भागों में विस्तृत है।
- **प्रमुख नदियाँ** :- वैनगंगा, वर्धा, पेंच, कन्हान, कुलबेहरा आदि
- मध्यप्रदेश में गोदावरी अपवाह तंत्र का कुल अपवाह क्षेत्र लगभग 23,388 वर्ग किमी है।

महानदी अपवाह तंत्र

- छत्तीसगढ़ के विभाजन के बाद महानदी अपवाह तंत्र मध्यप्रदेश का एक गौण अपवाह तंत्र बन गया है।
- वर्तमान में यह मध्यप्रदेश का सबसे छोटा अपवाह तंत्र है।
- अनूपपुर जिले में हसदेव एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा लगभग 154 वर्ग किमी क्षेत्र का अपवाह किया जाता है।

मध्य प्रदेश की नदियों को उनकी प्रवाह के दिशा के अनुसार निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है :-

मध्य प्रदेश की नदियाँ

उत्तर प्रवाहित नदियां
- चम्बल
- बेतवा
- क्षिप्रा
- टोंस
- कालीसिंध
- केन
- पार्वती

दक्षिण प्रवाहित नदियां
- वेनगंगा
- वर्धा
- पेंच
- कान्हन

पूर्व प्रवाहित नदियां
- सोन
- जोहिला

पश्चिम प्रवाहित नदियां
- नर्मदा
- ताप्ती
- माही



ब्रो MP की 5 लॉन्गेस्ट रिवर्स का न्यूमॉनिक कोड है - NC STB
इसी तरह भारत की 5 लॉन्गेस्ट रिवर्स का GG KYN | अब टेबल देखो

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्य प्रदेश की 5 सबसे लंबी नदियां (NC STB)

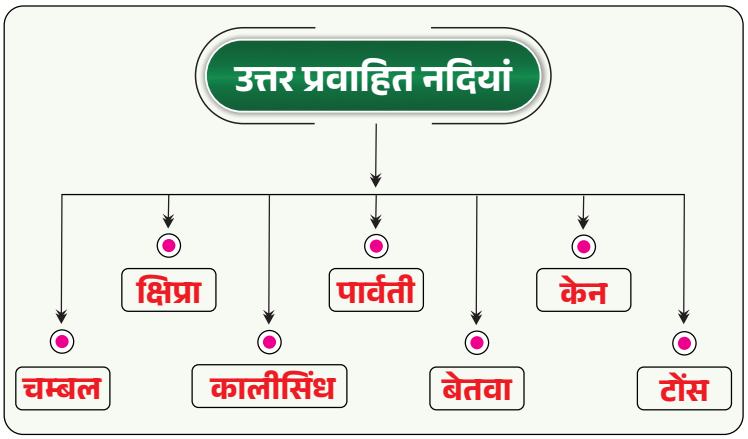
नदी का नाम	कुल लंबाई	म.प्र.में लंबाई
नर्मदा (N)	1312 किमी	1077 किमी
चंबल (C)	965 किमी	325 किमी
सोन नदी (S)	780 किमी	509 किमी
ताप्ती नदी (T)	724 किमी	322 किमी
बेतवा नदी (B)	590 किमी	232 किमी

भारत की 5 सबसे लंबी नदियाँ (GG KYN) - MPPSC 2025

नदी का नाम	कुल लंबाई
गंगा (G)	2525 किमी
गोदावरी (G)	1465 किमी
कृष्णा (K)	1400 किमी
यमुना (Y)	1376 किमी
नर्मदा (N)	1312 किमी

मध्यप्रदेश के प्रमुख अपवाह प्रतिरूप

अपवाह प्रतिरुप	प्रमुख उदाहरण
वृक्षाभ	राज्य की अधिकांश नदियाँ
अनुगामी	नर्मदा, ताप्ती
अध्यारोपित	चंबल (MPPSC MO, 2024)
आयताकार	सोन
जालायित	सोन की सहायक नदियाँ
समांतर	सोनार तथा टोंस



चंबल नदी

उद्गम

- वांचू पॉइंट, जानापाव पहाड़ी (854 मी.), डॉ. अंबेडकर नगर (महू) तहसील, इंदौर जिला।

क्या आपको पता है ?

जानापाव पहाड़ी,इंदौर से साढ़े सात नदियों का उद्गम होता है :- नखेरी, कारम, चम्बल, चोरल, गंभीर, अजनार, उमरा-सुम्रा



ऐतिहासिक नाम

- चर्मावती,धर्मावती,कामधेनु,पूर्णा,रंतिदेव की कीर्ति
- चंबल नदी को महाभारत में **'पूर्णा'** कहा गया है।
- कालिदास ने **'मेघदूत'** में चंबल नदी को **चर्मणवती/चर्मावती** कहा है।

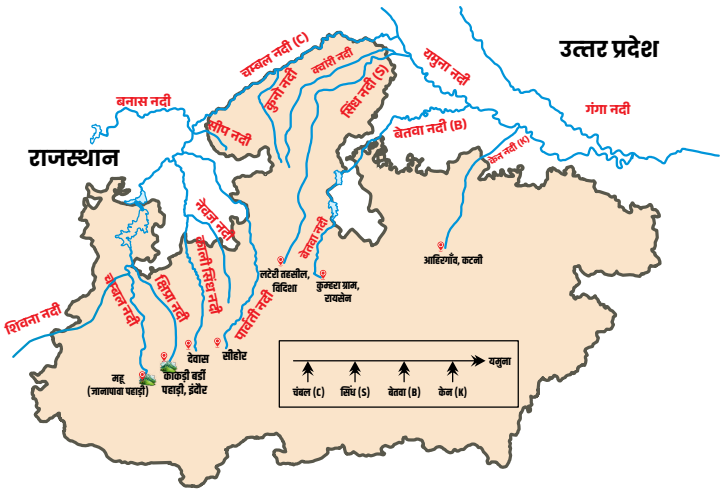
नोट



- पूर्णा नाम की एक अन्य नदी है जो ताप्ती की सहायक है।

कुल लम्बाई

- चंबल नदी की कुल लंबाई लगभग **965 किमी** है तथा यह मध्यप्रदेश, राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश से होकर प्रवाहित होती है।
- मध्यप्रदेश में इसका प्रवाह लगभग **325 किमी** है और यह प्रदेश की दूसरी सबसे लंबी नदी है।



CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

चंबल नदी का प्रवाह

महू इंदौर → उज्जैन → धार → रतलाम → मंदसौर → नीमच → राजस्थान → श्योपुर → मुरैना → भिंड → इटावा जिला → उत्तर प्रदेश → यमुना



अपवाह क्षेत्र

- **कुल अपवाह क्षेत्र** :- 1,30,671 वर्ग कि.मी.
- **मध्य प्रदेश में अपवाह क्षेत्र** :- 57,054 वर्ग कि.मी.

मुहाना

- चंबल नदी उत्तरप्रदेश के इटावा जिले में पंचनद के निकट यमुना नदी में मिल जाती है।
- इस प्रकार चम्बल नदी यमुना की दाएं तट की सहायक नदी है।

पंचनद

पंचनद उत्तरप्रदेश में जालौन, इटावा एवं औरैया जिलों की सीमा पर स्थित है यहाँ पाँच नदियों यमुना, चम्बल, सिंध, क्वाँरी एवं पहुंज का संगम होता है।

चंबल नदी तट पर अवस्थित प्रमुख शहर



चंबल नदी के प्रमुख जलप्रपात

- **झाड़ीदाह जलप्रपात** :- इंदौर जिला
- **शीतलामाता जलप्रपात** :- इंदौर जिला
- **चुलिया जलप्रपात** :- भैंसरोड़गढ़, चित्तौड़गढ़ जिला, राजस्थान

चंबल की प्रमुख सहायक नदियां

दाएं तट की सहायक नदियां	बाएं तट की सहायक नदियां
पार्वती	बनास
कालीसिंध	मेज
क्षिप्रा	बामनी
कूनो	कुराई
सीप	शिवना

- बनास चंबल की सबसे बड़ी व प्रमुख सहायक नदी है इसका उद्गम राजस्थान के अरावली पर्वत श्रेणी के कुम्भलगढ़ चोटी से होता है।
- सीप नदी का उद्गम श्योपुर से होता है इस पर बंजारा बाँध (श्योपुर जिला) निर्मित है।

नोट



- चंबल की प्रमुख सहायक नदियों, जैसे क्षिप्रा, कालीसिंध, पार्वती, कुनो एवं शिवना को आगे विस्तार से कवर किया गया है।

चंबल नदी घाटी परियोजना

- चंबल नदी घाटी परियोजना मध्य प्रदेश की **पहली नदी घाटी परियोजना** है जिसका शुभारंभ **वर्ष 1953** में जवाहरलाल नेहरू जी द्वारा किया गया था।
- यह मध्य प्रदेश एवं राजस्थान की संयुक्त परियोजना है जिसका निर्माण 3 चरणों में पूर्ण हुआ था।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

चंबल नदी घाटी परियोजना के चरण

- **प्रथम चरण** → 1960 में पूर्ण → गांधी सागर डैम, कोटा बैराज
- **द्वितीय चरण** → 1970 में पूर्ण → राणा प्रताप सागर
- **तृतीय चरण** → 1972 में पूर्ण → जवाहर सागर डैम

गांधी सागर डैम

- **अवस्थिति** :- भानपुरा तहसील,मंदसौर जिला (मध्य प्रदेश)
- **शिलान्यास** :- 7 मार्च 1954 पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा
- इस बांध की रिजर्वायर(गांधी सागर जलाशय) के द्वारा मंदसौर एवं नीमच जिले की सीमा का निर्धारण किया जाता है|
- **विद्युत उत्पादन क्षमता** :- 115 मेगावाट (23 मेगा वाट की 5 इकाइयां)

नोट

- गांधी सागर जलाशय में प्रतिवर्ष गांधी सागर फ्लोटिंग महोत्सव का आयोजन भी किया जाता है|

कोटा बैराज

- **अवस्थिति** :- कोटा शहर,राजस्थान
- **उद्देश्य** :- कोटा थर्मल पावर प्लांट को जल की आपूर्ति

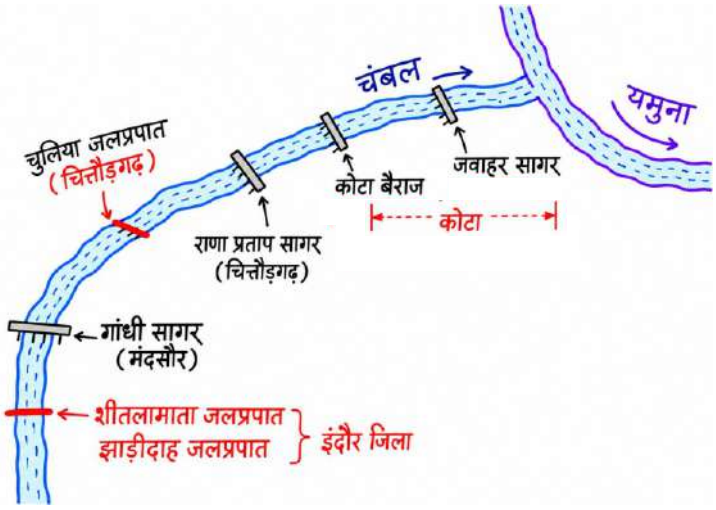


राणा प्रताप सागर बांध

- **अवस्थिति** :- रावतभाटा,चित्तौड़ जिला (राजस्थान)
- **विद्युत उत्पादन क्षमता** :- 172 मेगावाट (चंबल नदी घाटी परियोजना में सर्वाधिक) (43 MW की 4 टरबाइन इकाइयां)
- **जल आपूर्ति** :- रावतभाटा परमाणु विद्युत केंद्र को जल की आपूर्ति राणा प्रताप सागर बाँध से की जाती है।

जवाहर सागर बांध

- **अवस्थिति** :- कोटा शहर से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर बोरावास नाम की जगह में (राजस्थान)
- **विद्युत उत्पादन क्षमता** :- 99 मेगावाट(33 MW की 3 टरबाइन इकाइयां)
- बांध के आसपास का क्षेत्र जवाहर सागर वन्यजीव अभयारण्य के अंतर्गत आता है।



पार्वती-कालीसिंध-चंबल (PKC) लिंक परियोजना

- यह मध्यप्रदेश एवं राजस्थान की **अंतर्राज्यीय नदी-जोड़ो** परियोजना है।
- **उद्देश्य** :- सिंचाई, पेयजल एवं चंबल बेसिन के जल का बेहतर उपयोग।
- **किन नदियों को जोड़ा जाएगा** :- मुख्यतः पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी तंत्र को जोड़ा जाएगा।





मध्यप्रदेश के प्रमुख राजवंश एवं रियासत

मध्य प्रदेश के राजवंश एवं रियासत का टॉपिक अलग-अलग कालखंडों में बिखरा हुआ है। प्राचीन इतिहास में प्राचीन राजवंश, मध्यकालीन इतिहास में मध्यकालीन राजवंश तथा आधुनिक इतिहास में रियासतों का अध्ययन किया जाता है, जिससे यह टॉपिक अलग-अलग अध्यायों में बिखर जाता है और इसके क्रमबद्ध अध्ययन में असुविधा होती है।

"ब्रो! पहले मेरी एक बात सुन लो, फिर टॉपिक शुरू करते हैं... नहीं तो आगे जाकर बोलोगे - सर, ये राजवंश इधर का उधर और उधर का इधर क्यों हो गया!



- इसी असुविधा से बचने के लिए हम मध्य प्रदेश के प्राचीन,गुप्तोत्तर एवं राजपूत काल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक काल तक के सभी प्रमुख राजवंशों एवं रियासतों का अध्ययन एक ही मूल पाठ में करेंगे, ताकि पूरे टॉपिक को एक साथ और सही क्रम में समझा जा सके।
- आइए, अब मध्य प्रदेश से संबंधित प्राचीन गुप्तोत्तर काल, राजपूत काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल के प्रमुख राजवंशों एवं रियासतों का अध्ययन प्रारंभ करते हैं।

मध्यप्रदेश के प्रमुख राजवंश एवं रियासत

प्राचीन राजवंश
- गर्दभिल्ल वंश
- नागवंश
- कार्दमक वंश
- मेघ वंश
- बोधि वंश
- पाण्डु वंश
- अभीर वंश
- परिव्राजक वंश
- उच्चकल्प वंश
- शरभपुरीय वंश
- राजर्षितुल्य वंश

गुप्तोत्तर कालीन राजवंश
- राष्ट्रकूट वंश
- वर्धन वंश
- चालुक्य वंश
- मैत्रक वंश
- मौखरी वंश
- शैल वंश
- औलिकर वंश

राजपूतकालीन राजवंश
- गुर्जर-प्रतिहार वंश
- चंदेल वंश
- परमार वंश
- कलचुरी वंश
- कच्छपघात वंश
- गुहिल वंश

मध्यकालीन राजवंश
- मालवा सल्तनत (गौरी, खिलजी वंश एवं अन्य शासक)
- फारुख़ी वंश
- तोमर वंश
- गोंड वंश
- खंगार वंश
- बुंदेला वंश
- बघेल वंश

आधुनिक राजवंश
- होल्कर रियासत
- सिंधिया रियासत
- भोपाल रियासत








रियासत एवं राजवंश का सामान्य अर्थ लगभग समान संदर्भ में लिया जाता है, लेकिन ब्रिटिश काल में जब देशी राजवंशों के राज्यों पर अंग्रेजी सर्वोच्चता स्थापित हुई, तब ऐसे राज्यों को 'रियासत' (Princely State) कहा जाने लगा।



राजवंशों को डिटेल में पढ़ने से पहले अपन एक नजर में सारे राजवंशों के संस्थापक और उनका राज्यक्षेत्र देख लेते हैं

मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश, क्षेत्र एवं उनके संस्थापक

राजवंश	संस्थापक	शासित क्षेत्र
गर्दभिल्ल वंश	महेंद्रादित्य गंधर्व सेन (वास्तविक संस्थापक :- विक्रमादित्य)	मालवा (उज्जैन)
नाग वंश	वृषनाग	विदिशा-ग्वालियर (पवाया)
कार्दमक वंश	यशोमति/चष्टन	उज्जैन क्षेत्र
क्षहरात वंश	भूमक	भिन्ननगर (मंदसौर), उज्जैन
मेघ वंश	भीम सेन	बघेलखंड (बांधवगढ़)
पाण्डु वंश	नागबल, भरतबल	अमरकंटक,मैकाल
अभीर वंश	ईश्वर सेन	महाराष्ट्र (म.प्र. में अनूप क्षेत्र/निमाड़)
परिव्राजक वंश	सुशर्मन/देवाढ्य (देवादय)	बुंदेलखंड (पन्ना)-बघेलखंड क्षेत्र (सतना)
उच्चकल्प वंश	ओघदेव (आद्यदेव)	बघेलखंड (उचेहरा/सतना)
औलिकर वंश	जयवर्मा (प्रथम शाखा), द्रव्यवर्धन (द्वितीय शाखा) द्वितीय शाखा का वास्तविक संस्थापक :- प्रकाशधर्मा	पश्चिमी मालवा
वाकाटक वंश	विंध्यशक्ति	मध्य भारत और दक्कन
राष्ट्रकूट वंश	दंतिदुर्ग	दक्कन (दक्षिणी म.प्र)
वर्धन वंश	पुष्यभूति	लगभग सम्पूर्ण उत्तरी भारत
चालुक्य वंश	जय सिंह	दक्षिणी म.प्र. और दक्कन
मैत्रक वंश	भट्टार्क	गुजरात (म.प्र. में मालवा)
मौखरी वंश	हरिवर्मा	म.प्र.में पूर्वी निमाड़ (असीरगढ़ क्षेत्र)
शैल वंश	श्रीवर्धन	महाकौशल
गुर्जर-प्रतिहार वंश	राजा हरिश्चंद्र (मध्यप्रदेश में :- नागभट्ट प्रथम)	उत्तर भारत
चंदेल वंश	नन्नुक (वास्तविक संस्थापक :-यशोवर्मन)	बुंदेलखंड

5वीं सदी ई. के आसपास राजर्षितुल्य वंश (संस्थापक - शूरा) तथा शरभपुरीय वंश (संस्थापक - शरभराज) का शासन दक्षिण कौशल से महाकौशल तक विस्तृत था।



राजवंश	संस्थापक	शासित क्षेत्र
परमार वंश	उपेंद्र कृष्णराज	मालवा
कल्चुरी वंश	वामराज (त्रिपुरी शाखा) (वास्तविक संस्थापक :- कोकल्ल देव प्रथम)	डाहल (महाकौशल, बघेलखण्ड, गोंडवाना)
गुहिल वंश	प्रथम ज्ञात शासक :- विग्रहपाल	पश्चमी म.प्र.
कच्छपघात वंश	ग्वालियर शाखा - लक्ष्मण/वज्रदामन दूबकुंड शाखा - युवराज नरवर शाखा – सुमित्र	उत्तरी म.प्र.
गौरी वंश	दिलावर खान गौरी	मालवा
खिलजी वंश	महमूद खिलजी प्रथम	मालवा
फ़ारूक़ी वंश	मलिक अहमद रज़ा	खानदेश (निमाड़)
तोमर वंश	वीरसिंह देव तोमर	ग्वालियर-चम्बल क्षेत्र
गोंड वंश	यादव राय	नर्मदा घाटी एवं दक्षिण-पूर्वी म.प्र.
देवगढ़ का धुरवा गोंड राज्य	प्रथम शासक :- तुलोबा	छिंदवाड़ा क्षेत्र
खेरला का गोंड राज्य	राजा इल	बैतूल क्षेत्र
खंगार वंश	महाराजा खेतसिंह	बुंदेलखंड (निवाड़ी)
बुंदेला वंश	सोहनपाल बुंदेला वास्तविक संस्थापक :- रूद्र प्रताप सिंह	बुंदेलखंड क्षेत्र
ओरछा रियासत	रुद्र प्रताप सिंह	ओरछा क्षेत्र (निवाड़ी जिला)
पन्ना रियासत	चम्पत राय वास्तविक संस्थापक :- छत्रसाल बुंदेला	पन्ना क्षेत्र
दतिया रियासत	भगवान राव	दतिया क्षेत्र
अजयगढ़ रियासत	गुमान सिंह	अजयगढ़ क्षेत्र (पन्ना जिला)
शाहगढ़ रियासत	हिरदेशाह	सागर क्षेत्र
चंदेरी-बानपुरा रियासत	भरत सिंह बुंदेला	छतरपुर क्षेत्र
विजयराघवगढ़ रियासत	बैनी हजूरी कछवाहा	कटनी क्षेत्र
जैतपुर रियासत	जगतराज बुंदेला	जैतपुर क्षेत्र (महोबा जिला)
छतरपुर रियासत	सोने सिंह परमार/सुनेजु पवार बुंदेला	अशोकनगर-ललितपुर क्षेत्र



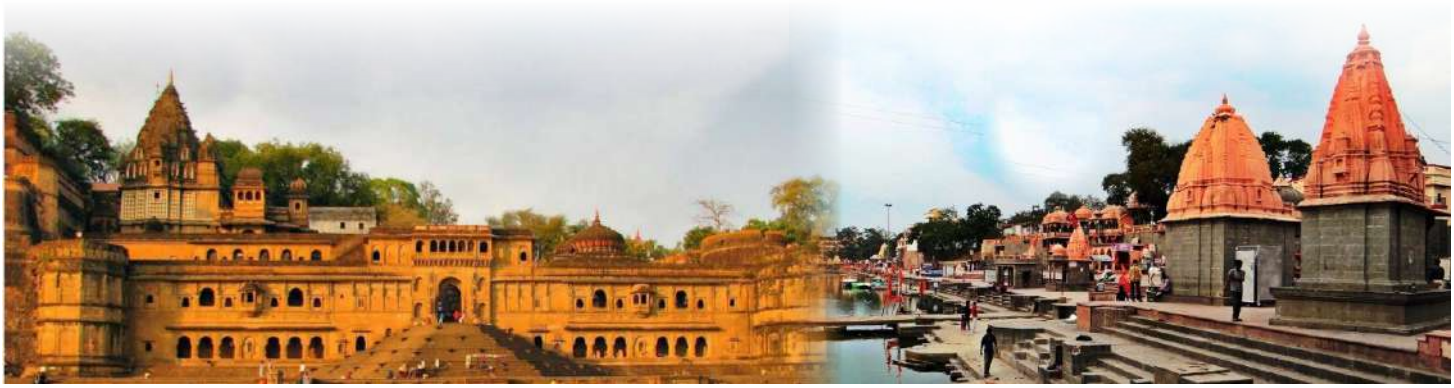


CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

राजवंश	संस्थापक	शासित क्षेत्र
बघेल वंश	भीमलदेव	पूर्वी म.प्र.
सिंधिया	राणोजी सिंधिया (वास्तविक संस्थापक :- महादजी सिंधिया) (ग्वालियर में सिंधिया वंश के संस्थापक :- दौलतराव सिंधिया)	उत्तरी म.प्र.
होल्कर	मल्हार राव होल्कर (वास्तविक संस्थापक :- यशवंत राव होल्कर I)	पश्चिमी म.प्र.
पवार वंश	उदाजी पवार/आनंद पवार	धार
तुकोजी वंश	तुकोजीराव प्रथम	देवास (बड़ी पाँती)
जीवाजी वंश	जीवाजीराव	देवास (छोटी पाँती)
भोपाल रियासत	दोस्त मो. खान (वास्तविक संस्थापक :- सिकंदर जहां बेगम)	केंद्रीय म.प्र.

प्राचीन राजवंश





CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

गर्दभिल्ल वंश

जानकारी के स्रोत
सोमदेव कृत कथासरित्सागर, थेरावली ग्रंथ (मेरुतुङ्ग) आदि से जानकारी मिलती है।

शासन काल
प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में लगभग 150 वर्षों तक शासन रहा

संस्थापक
राजा गर्दभिल्ल
(अन्य नाम :- गंधर्व सेन/महेंद्रादित्य गंधर्व)

राजधानी
उज्जैनी

प्रमुख शासक
राजा गर्दभिल्ल, भर्तृहरि, विक्रमादित्य, धर्मादित्य,भाइल्ल,नाईल्ल।

अंतिम ज्ञात शासक
नाहद्र

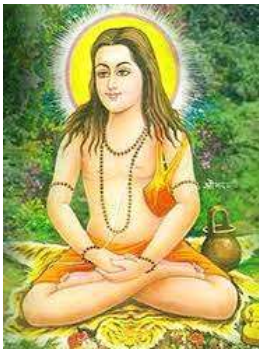
गर्दभिल्ल वंश के प्रमुख शासक एवं उनसे संबंधित तथ्य

राजा गंधर्व सेन

- **अन्य नाम** :- गर्दभिल्ल सेन(विष्णुपुराण में), महेंद्रादित्य गंधर्व।
- गर्दभी विद्या का ज्ञाता होने के कारण गंधर्व सेन का नाम गर्दभिल्ल पड़ा|
- **स्थापत्य कार्य** :- गंधर्वपुरी की स्थापना (सोनकच्छ, देवास)|
- उज्जैन में इन्होंने मालव गण की स्थापना की।
- आगे चलकर शकों ने गंधर्वसेन को पराजित कर कुछ समय के लिए उज्जैन के कुछ हिस्सों पर अधिकार कर लिया।
- **इनके 2 पुत्र हुए** :- 1) भर्तृहरि (उत्तराधिकारी) 2) विक्रमादित्य

भर्तृहरि

- भर्तृहरि राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई थे|
- रानी पिंगला की कथा के अनुसार, वैराग्य उत्पन्न होने पर संन्यास धारण किया।
- सन्यास धारण करने के उपरांत यह नाथ संप्रदाय में शामिल हुए|
- **भर्तृहरि के गुरु** :- गोरखनाथ(गोरखनाथ+भर्तृहरि गुफा - उज्जैन)
- **साधना स्थली** :- चुनार (उ.प्र.)
- **समाधि स्थली** :- सरिस्का (अलवर जिला, राजस्थान)
- **भर्तृहरि की रचनाएं** :- शतक त्रयी (नीति शतक, श्रृंगार शतक, वैराग्य शतक), शब्द धातु समीक्षा, त्रिकांडी वाक्यपदीय, वाक्यपदीय वृत्ति, भागवृत्ति, मीमांसासूत्र-वृत्ति, वेदान्त सूत्र वृत्ति, महाभाष्य दीपिका, महाभाष्य त्रिपदी, भट्टिकाव्य आदि।



रानी से वियोग एवं सन्यास धारण करने की राजा भर्तृहरि की कथा को मालवा क्षेत्र में 'भर्तृहरि गायन' लोकगीत के रूप में गया जाता है।

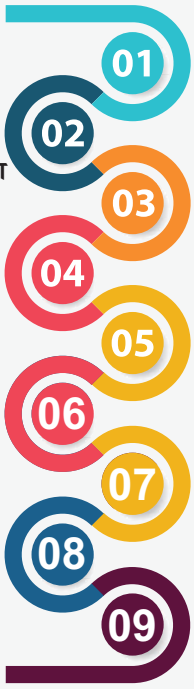


विक्रमादित्य

- उज्जैन के प्रसिद्ध और आदर्श राजा के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- **शासनकाल** :- 57 ई.पू. से 19 ई.पू
- **अभिभावक** :- महेंद्रादित्य गंधर्व एवं सौम्यदर्शना
- **पुत्री** :- प्रियंगमंजरी
- **उपाधि** :- शकारि(शकों को पराजित करने वाला), विक्रमसेन

- **आराध्य देवी** - हरसिद्धि माता (उज्जैन)
- भीमबेटका की भित्ति चित्रों से विक्रमादित्य के अश्वमेध यज्ञ का चित्र प्राप्त हुआ है।
- इन्होंने 57 ईसा पूर्व में शक वंश के अंतिम शासक **रुद्रसेन तृतीय को पराजित** किया। इस विजय की स्मृति में **57 ईसा** पूर्व से **विक्रम संवत्** का आरंभ हुआ।
- **नेपाल और कश्मीर** में उनका प्रभाव रहा, और कहा जाता है कि **ईरान** तक उनका शासन फैला था।
- विक्रमादित्य के नेपाल अभियान के दौरान वहाँ का शासक अंशुवर्मा था।
- अरबी ग्रंथ **'सयार-उल-औकुल'** में विक्रमादित्य के पराक्रम एवं यश का उल्लेख मिलता है।
- **'बेताल पच्चीसी' (रचयिता - बेताल भट्ट)** और **'सिंहासन बत्तीसी' (अलग-अलग विद्वानों द्वारा संकलित)** में विक्रमादित्य का वर्णन मिलता है।
- **स्थापत्य कार्य** - उज्जैन का महाकाल मंदिर, अयोध्या का राम मंदिर, कनकभवन(अयोध्या) का जीर्णोद्धार, गुजरात से हरसिद्धि माता के मूर्ती को लाकर उज्जैन में स्थापित किया|
- उनकी वीरता से प्रेरित होकर भारत में कुल **14 विक्रमादित्य** हुए, जिनमें सबसे प्रसिद्ध चंद्रगुप्त विक्रमादित्य और अंतिम हेमू (हेमचंद्र) विक्रमादित्य थे।

विक्रमादित्य के दरबार में नौ विद्वान (नौरत्न) रहते थे जो किस प्रकार हैं -



1. **धनवंतरी** - वैद्य
2. **क्षपणक** - बौद्ध धर्माचार्य, ग्रन्थ :- भिक्षाटन,नानार्थकोश
3. **अमर सिंह** - सलाहकार, ग्रन्थ :- अमरकोश
4. **शंकु** - नीतिशास्त्र सलाहकार, वास्तुशास्त्र के ज्ञाता, ग्रन्थ :- भुवन अभ्युदम
5. **बेतालभट्ट** - धर्माचार्य, ग्रन्थ :- बेताल पच्चीसी
6. **घटकर्पर** - संस्कृत विद्वान, ग्रंथ :- घटकर्पर काव्यम
7. **कालिदास** - महाकवि, 7 प्रमुख ग्रन्थ
8. **वररूचि** - कवि और संस्कृत व्याकरणाचार्य
9. **वाराहमिहिर** - जन्म :- कायथा, उज्जैन, ग्रंथ :- पंचसिद्धांतिका, बृहज्जातक,बृहत्संहिता

मंत्रीपरिषद	शासक
नवरत्न	चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य, अकबर
नवग्रह	कुषाण शासक कनिष्क
अष्टप्रधान	छत्रपति शिवाजी महाराज
अष्टदिग्गज	कृष्णदेव राय (विजयनगर शासक)



विक्रम संवत्

- **प्रारम्भ** - 57 ई.पू.
- **अवसर** - गर्दभिल्ल शासक विक्रमादित्य द्वारा उज्जैन से शकों को पराजित करना।
- **अन्य नाम** - कृत संवत् (आरंभिक नाम) MPPSC PRE 2021, **मालव संवत (औलिकर शासकों द्वारा),विजय संवत्।**
- कृत संवत को 8वीं शताब्दी के बाद विक्रम संवत् कहा जाने लगा था। यह कैलेंडर वर्तमान में प्रचलित ग्रेगोरियन कैलेंडर से 57 वर्ष आगे है।
- **उदाहरण** :- अगर वर्तमान में ग्रेगोरियन कैलेंडर में वर्ष 2028 है तो विक्रम संवत के अनुसार वर्ष 2085 होगा।
- **प्रथम उल्लेख** :- ओखामण्डल (गुजरात) के शासक जयकदेव के शिलालेख (विक्रम संवत् 794 में)।
- यह एक **लूनी-सौर पंचांग (Lunisolar Calendar)** है।
- **आरंभ** :- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (मार्च - अप्रैल) से वर्ष का आरंभ माना जाता है।
- विक्रम संवत् **नेपाल का राष्ट्रीय कैलेण्डर** है।

नोट

- भारत का राष्ट्रीय कैलेण्डर शक संवत् पर आधारित है जिसे 22 मार्च 1947 को अपनाया गया था|
- शक संवत की शुरुवात सम्राट कनिष्क ने 78 ईस्वी में की थी।





मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

मध्यप्रदेश में सल्तनत काल

महमूद गजनवी व गौरी

दिल्ली सल्तनत

- गुलाम वंश
- खिलजी वंश
- तुगलक वंश
- सैय्यद वंश
- लोदी वंश

मध्यप्रदेश में मुग़ल काल

- बाबर
- हुमायूँ
- शेरशाह सूरी
- अकबर
- जहाँगीर
- शाहजहाँ
- औरंगजेब

मध्यप्रदेश में सल्तनत काल

महमूद गजनवी व गौरी

- महमूद गजनवी ने 1019 ई. में कालिंजर तथा 1021–1022 ई. में ग्वालियर पर आक्रमण किया।
- विद्याधर एवं महमूद गजनवी के मध्य दो संघर्ष (1019–20 ई. और 1022 ई.) हुए, लेकिन दोनों में से किसी की स्पष्ट विजय नहीं हुई।
- अतः विद्याधर उत्तर भारत का एकमात्र शासक था जिसने गजनवी के आक्रमण को असफल किया।
- महमूद गजनवी से युद्ध के उपरांत, विद्याधर ने खजुराहो के प्रसिद्ध कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण करवाया।
- मोहम्मद गौरी के 1195-96 ई. में ग्वालियर पर आक्रमण कर ग्वालियर के शासक लोहांगदेव को पराजित किया।

दिल्ली सल्तनत

- **गुलाम वंश** (1206-1290)
  संस्थापक :- कुतुबुद्दीन ऐबक
- **खिलजी वंश** (1290-1320)
  संस्थापक :- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी
- **तुगलक वंश** (1320-1414)
  संस्थापक :- गयासुद्दीन तुगलक
- **सैय्यद वंश** (1414-1451)
  संस्थापक :- खिज्र खाँ
- **लोदी वंश** (1451-1526)
  संस्थापक :- बहलोल लोदी

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

गुलाम वंश (1206-1290)

- मालवा में कुतुबुद्दीन ऐबक का पहला आक्रमण उज्जैन पर हुआ।
- 1202-03 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने चंदेल राजा परमर्दिदेव (परिमल देव) को हराकर कालिंजर / खजुराहो पर अधिकार किया।
- 1232 ई. में इल्तुतमिश ने ग्वालियर दुर्ग के प्रतिहारों को पराजित किया, जिसके बाद प्रतिहार राजपूत महिलाओं ने जौहर कुण्ड में जौहर किया।
- 1234 ई. में इल्तुतमिश ने मालवा अभियान के दौरान भिलसा (विदिशा) पर आक्रमण किया। इस समय मालवा में परमार शासक देवपाल का शासन था।
- **'तबकात-ए-नासिरी'** (लेखक – मिन्हाज-उस-सिराज) से ज्ञात होता है कि 1235 ई. में इल्तुतमिश ने उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर को लूटा तथा विक्रमादित्य की विशाल प्रतिमा उज्जैन से दिल्ली ले गया।
- महाकालेश्वर मंदिर को लूटने वाला **इल्तुतमिश पहला सुल्तान** था।

1250 ई. में बलबन ने मालवा के परमार शासक जैतुगिदेव पर आक्रमण किया।

- **'रक्त और लौह नीति'** के तहत गयासुद्दीन बलबन ने नरवर(शिवपुरी) के राजा चहाड़देव पर 1251 में आक्रमण किया।

जौहर

- पराजय निश्चित होने पर बंदी एवं अपमान से बचने हेतु राजपूत महिलाओं का सामूहिक अग्नि-आत्मदाह जौहर कहलाता था।
- **प्रारंभिक उदाहरण** :- अरब आक्रमण (712 ई.) के दौरान राजा दाहिर की पत्नी रानी लाड़ी का जौहर।
- **म.प्र. का सबसे बड़ा जौहर कुंड** :- मान मंदिर महल (ग्वालियर किला)।



खिलजी वंश (1290-1320)

- 1292 ई. में ही अलाउद्दीन खिलजी ने परमार राजा भोज द्वितीय के समय मालवा पर आक्रमण किया था।
- 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति **ऐन-उल-मुल्क** ने मालवा पर आक्रमण कर अंतिम परमार शासक महलकदेव की हत्या कर दी तथा परमार राज्य को दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया।
- अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन खिलजी की मांडू विजय के उपलक्ष्य में कहा – **"मांडू विजय दक्षिण विजय की कुंजी है।"** (MPPSC PRE 2020)
- **सलैया शिलालेख** (दमोह) में अलाउद्दीन खिलजी को **'सार्वभौम शासक'** बताया गया है।

तुगलक वंश (1320-1414)

- बटियागढ़ (दमोह) शिलालेख में **मोहम्मद बिन तुगलक** का उल्लेख है।
- राजधानी परिवर्तन के दौरान लगभग 1344 ई. में मोहम्मद बिन तुगलक ने **धार किले का पुनर्निर्माण** करवाया।
- मोहम्मद बिन तुगलक ने मालवा का सूबेदार अजीज बहिमार को तथा चंदेरी का प्रशासक गुलीक खां को नियुक्त किया।
- तुगलक काल में मालवा में दिलावर खाँ गौरी तथा बुरहानपुर में मलिक राजा ने स्वतंत्र राज्य की घोषणा की।
- फिरोजशाह तुगलक ने मलिक रजा को बुरहानपुर का सूबेदार नियुक्त किया।
- 1390 ई. में सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद शाह तुगलक ने दिलावर खां को मालवा में सूबेदार नियुक्त किया गया, जिसने आगे चलकर मालवा में स्वतंत्र मुस्लिम राजवंश की स्थापना की।

नोट

मालवा एवं खानदेश सल्तनत को 'राजवंश एवं रियासत' टॉपिक में कवर किया जा चुका है।



MCQs, PYQs, Tricks और Updates के लिए Scan करें

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

बटियागढ़ अभिलेख

- **अवस्थिति** :- दमोह
- **लेखक** :- जलाल ख्वाज़ा
- **भाषा** :- संस्कृत एवं फ़ारसी
- इस अभिलेख से मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है।
- इस अभिलेख में दिल्ली को **"योगिनीपुर"** या **"जोगनीपुर"** कहा गया है।

दुलचीपुर शिलालेख

- **अवस्थिति :- दुलचीपुर,छतरपुर जिला**
- **इस अभिलेख से फिरोजशाह तुगलक की जानकारी प्राप्त होती है।**
- **नोट :- कुछ स्रोतों में दुलचीपुर को दुलानीपुर कहा गया है जो सागर में अवस्थित है।**

धार का किला

- **निर्माण** :- राजा भोज द्वारा **"लीलोद्यान गिरी"** के नाम से।
- **पुनर्निर्माण** :- मोहम्मद बिन तुगलक द्वारा 1344 ईस्वी में, जब उसने **दिल्ली से दौलताबाद** राजधानी का परिवर्तन किया।
- **स्थापत्य शैली** :- इंडो-इस्लामिक एवं अफ़ग़ान (लाल बलुआ पत्थर से निर्मित)
- मराठा साम्राज्य के अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय (10 जनवरी, 1775) का जन्म इसी किले में हुआ था।
- **किले के भीतर ऐतिहासिक इमारत** :- कालका माता मंदिर (परमार वंश की कुलदेवी), खरबूजा महल एवं अब्दुलशाह चंगस का मकबरा।
- मराठा काल में यह किला पवार मराठों के अधीन था।



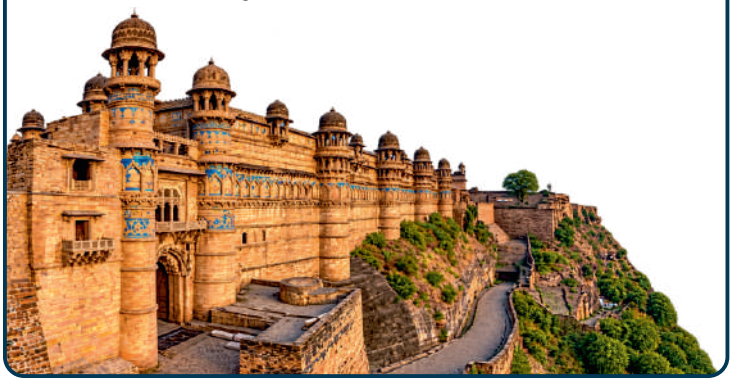
धार के अतिरिक्त एक खरबूजा महल **बुरहानपुर** में भी अवस्थित है।

सैय्यद वंश (1414-1451)

- सैय्यद वंश के संस्थापक ख़िज्र खाँ ने ग्वालियर के तत्कालीन शासक वीरमदेव तोमर से कर वसूली के लिए अपने वज़ीर **ताज-उल-मुल्क** को ग्वालियर भेजा था।
- सैय्यद वंश के शासक मुबारक शाह ने 1429-30 ई. में ग्वालियर पर अधिकार किया। इस समय ग्वालियर में तोमर शासक डूंगर सिंह का शासन था।

लोदी वंश (1451-1526)

- लोदी वंश के संस्थापक बहलोल लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया था, लेकिन मानसिंह तोमर से पराजय मिली।
- सिकंदर लोदी ने ग्वालियर पर पाँच बार आक्रमण किया, किंतु वह ग्वालियर पर निर्णायक विजय प्राप्त नहीं कर सका।
- 1517 ई. में मानसिंह के उत्तराधिकारी विक्रमादित्य तोमर ने इब्राहिम लोदी की अधीनता स्वीकार कर ली।
- विक्रमजीत को पराजित करने के बाद इब्राहिम लोदी ने तातार खाँ को ग्वालियर का किलेदार बनाया।
- विक्रमजीत तोमर ने इब्राहिम लोदी की तरफ से बाबर के खिलाफ पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में भाग लिया और मारा गया।



"कहा जाता है कि विक्रमादित्य तोमर से ही हुमायूँ को 'कोहिनूर' हीरा' प्राप्त हुआ था, जिसे हुमायूँ ने बाबर को तोहफे में दिया था और उस हीरे का नाम 'बाबरी हीरा' पड़ा।







मध्य प्रदेश का आधुनिक इतिहास

मध्य प्रदेश का आधुनिक इतिहास

- 1857 के पूर्व के विद्रोह एवं प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन

टाइम लाइन

तिथि	ऐतिहासिक घटना
03 जून 1857	नीमच छावनी से मध्य प्रदेश में 1857 की क्रांति की शुरुआत
1918	गांधी जी की मध्य प्रदेश में पहली यात्रा आठवें हिंदी साहित्य सम्मेलन इंदौर की अध्यक्षता की।
1920	खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन
1920-21	कसाई खाना आंदोलन, सागर
18 मार्च 1923	जबलपुर में झंडा सत्याग्रह
18 जून 1923	मध्य प्रदेश में झंडा दिवस
1930	घोड़ा डोंगरी जंगल सत्याग्रह,बैतूल
अक्टूबर 1930	घुनघुटी जंगल सत्याग्रह, उमरिया
11 अगस्त 1930	छिंदवाड़ा जंगल सत्याग्रह
सितम्बर 1930	ओरछा जंगल सत्याग्रह
1931	स्त्री सेवा दाल
14 जनवरी 1931	चरणपादुका नरसंहार

व्यक्ति	रचना
23-24 जुलाई 1931	पंजाब मेल हत्याकांड
1934	प्रजामण्डल
1934	अंजुमन खुद्दाम-ए-वतन
1934	भोपाल राज्य हिन्दू सभा
10 जुलाई 1938	सोहावल नरसंहार
08 फरवरी 1939	थौना-लोहारी गोलीकांड
10-12 मार्च 1939 (29 जनवरी)	त्रिपुरी अधिवेशन
06 सितम्बर 1942	सराफा सत्याग्रह
12 सितम्बर 1942	चिमनबाग सत्याग्रह
02 अक्टूबर 1942	म.प्र.में भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत
1942	वीर उदय चंद जैन की शहादत
18 जून 1946	गोवा मुक्ति आंदोलन
28 फरवरी 1947	चावल आंदोलन
14 जनवरी 1949	बोरास गाँव हत्या काण्ड

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

1857 के पूर्व के विद्रोह एवं प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

अप्पाजी भोंसले का विद्रोह, 1818 | भील विद्रोह, 1817-18 | कुँवर चैनसिंह का विद्रोह (1824 ई.) | बुंदेला विद्रोह, 1842 | मध्य प्रदेश में 1857 की क्रांति

अप्पाजी भोंसले का विद्रोह

- अप्पाजी भोंसले नागपुर के मराठा सरदार थे।
- **शुरुआत** :- 1818 ई.
- **क्षेत्र** :- महाकौशल क्षेत्र (जबलपुर)।
- **उद्देश्य** :- अंग्रेजी हस्तक्षेप का विरोध करना।
- **सहयोग** :- अरबी सैनिकों की सहायता प्राप्त की।
- **परिणाम** :- अप्पाजी भोंसले अंग्रेजों से युद्ध में पराजित हो गए। अप्पाजी भोंसले से प्राप्त क्षेत्रों को मिलाकर अंग्रेजों ने **"सागर-नर्मदा टेरिटरीज़"** का गठन 1820 में किया जिसका मुख्यालय सागर था।

नोट

लालजू सिंह ने 1811 ई. में भिंड से अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया, जिसमें वे शहीद हो गए।

भील विद्रोह

- **वर्ष** :- 1817-18
- **क्षेत्र** :- मध्यप्रदेश का खानदेश(निमाड़) एवं महाराष्ट्र
- **नेतृत्वकर्ता** :- सेवाराम भील
- **मुख्य कारण** :- अंग्रेजों का बढ़ता हस्तक्षेप
- इस विद्रोह को पेशवा बाजी राव द्वितीय के मंत्री त्रयम्बक राव का सहयोग प्राप्त था।

Bhil Corps का गठन

- **वर्ष :- 1827**
- **गठित करने वाले :- कर्नल जेम्स आउट्रम।**
- **स्थान :- खंडवा-बड़वानी क्षेत्र (निमाड़)।**
- **कारण :- भीलों की ऊर्जा और युद्धक कौशल को पुलिस/सुरक्षा कार्यों में लगाना।**

कुँवर चैनसिंह का विद्रोह

- वर्ष 1818 में भोपाल के नवाब नज़र मोहम्मद खान और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच संधि हुई।
- इस संधि के तहत सीहोर में एक सैन्य छावनी स्थापित की गई।
- अंग्रेज पॉलिटिकल **एजेंट मैडॉक** को भोपाल, नरसिंहगढ़, खिलचीपुर और राजगढ़ रियासतों के राजनैतिक अधिकार सौंपे गए।
- **विद्रोह का कारण** :- नरसिंहगढ़ के राजा चैनसिंह ने एजेंट मैडॉक का हस्तक्षेप अस्वीकार किया।
- **मुख्य घटना** :- 23-24 जुलाई 1824 ई. को सीहोर में अंग्रेजों और कुँवर चैनसिंह के बीच भीषण युद्ध हुआ।
- **परिणाम** :- कुँवर चैनसिंह तथा अंगरक्षक **हिम्मत खाँ** और **बहादुर खाँ** वीरगति को प्राप्त हो गए।
- **बलिदान** :- 24 जुलाई 1824 (कौमी एकता दिवस)

कुँवर चैनसिंह

- **सम्बन्ध** :- नरसिंगढ़ रियासत (राजगढ़ जिला) [MPPSC AD 2024]
- **अन्य नाम** :- मध्यप्रदेश का मंगल पाण्डे।
- **समाधि** :- सीहोर (दशहरा मैदान)।
- **सम्मान** :- मध्यप्रदेश सरकार ने 2015 में सीहोर स्थित कुँवर चैनसिंह की छत्री पर गार्ड ऑफ ऑनर दिया था।



CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

बुंदेला विद्रोह

- यह बुंदेलखंड, महाकौशल एवं गोंडवाना के शासकों-जागीरदारों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध एक सशक्त विद्रोह था।
- **कब हुआ** :- 1842–45
- **कारण** :- अंग्रेजों का बढ़ता हस्तक्षेप
- **पृष्ठभूमि** :- बुढ़वा मंगल उत्सव, 1836 का आयोजन (MPPSC AP 2022)
- **नेता** :- जैतपुर रियासत (महोबा, उत्तरप्रदेश)के शासक राजा परीक्षित

राजा परीक्षित एवं अंग्रेजों के मध्य हुए प्रमुख युद्ध

युद्ध	परिणाम
बिलगाँव का युद्ध	राजा परीक्षित विजय
पनवाड़ी का युद्ध	राजा परीक्षित विजय
बघौरा/बगौरा का युद्ध	राजा परीक्षित की पराजय

अन्य नेतृत्वकर्ता

- मधुकरशाह (नरहट, सागर)
- ढिल्लनशाह (चावरपाठा–मदनपुर, नरसिंहपुर)
- राजा हिरदेशाह (हीरापुर, नरसिंहपुर)
- हिन्दुपत (बेलखेड़ा)

परिणाम

- अंग्रेजों ने विद्रोह का दमन किया।
- **दमन में शामिल अंग्रेज अधिकारी** :- फ्रेजर, कर्नल एली, वाटसन, कैप्टन हैमिल्टन आदि।
- सागर में मधुकरशाह को मात्र 21 वर्ष की आयु में फाँसी दी गई।
- **"मधुकर शाह : बुंदेलखण्ड का नायक"** पुस्तक के लेखक :- गोविन्द नामदेव।

असफलता के कारण

- बुंदेलखंड के कुछ रियासतों के शासकों का अंग्रेजों से मिल जाना जैसे :- बखतवली



राजा हिरदेशाह को **'नर्मदा का शेर'** कहा जाता है।

म. प्र. में 1857 की क्रांति

तिथि	घटनाक्रम
03 जून 1857	मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति का प्रारंभ नीमच छावनी से
14 जून 1857	मुरार छावनी (ग्वालियर) में दूसरा विद्रोह
30 जून 1857	शिवपुरी छावनी में विद्रोह
1 जुलाई 1857	इंदौर में सआदत खान,वारिस मो.खान तथा भगीरथ सिलावट ने विद्रोह किया |
03 जुलाई 1857	शाहगढ़ (सागर) के राजा बखतवली के सेनापति बोधन दौआ का अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह।
26 जुलाई 1857	अम्बापानी के नवाब फ़ाज़िल मोहम्मद खान एवं आदिल मो. खान का राहतगढ़ पर अधिकार।
अगस्त 1857	सोहागपुर (शहडोल) से गरुल सिंह का विद्रोह
18 सितम्बर 1857	शंकरशाह एवं रघुनाथशाह की शहादत
20 सितम्बर 1857	शाहपुरा (मंडला जिला) से विजय सिंह तथा रामगढ़ (मंडला-डिंडोरी) से रानी अवंतीबाई लोधी का विद्रोह।
10 अक्टूबर 1857	धार के अमझेरा,ओपावर तथा सरदारपुर से राजा बख्तावर सिंह का विद्रोह
नवंबर 1857	भागीरथ सिलावट (इंदौर) को फांसी
07 जनवरी 1858	महिदपुर (उज्जैन) से क्रांति का नेतृत्व कर रहे सदाशिव राव को अंग्रेजों ने तोप से उड़ा दिया।
29-30 जनवरी 1858	अम्बापानी (रायसेन) के जागीरदार फ़ाज़िल मो.खान को राहतगढ़(सागर) में फांसी ।





CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्य प्रदेश की लोक संस्कृति

मध्यप्रदेश के प्रमुख क्षेत्रों के लोकगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य एवं लोक चित्रकला

क्षेत्र	लोकगीत	लोकनृत्य	लोकनाट्य	लोक चित्रकला
निमाड़	कलगी-तुर्रा/तुर्रा-कलंगी (MPPSC Pre 2021) संत सिंगाजी भजन मसाण्या नाथपंथी गायन गवलन गरबा-गरबी	गणगौर काठी फेफरिया मांडल्या आड़ाखड़ा डंडा	गम्मत रासलीला स्वांग ठोळ्या	पगल्या थापा कंचाली संजा फूली ईरत मोरधन जिरोती खोपड़ी पूजन नागचित्र नवरत
मालवा	भरथरी संजा गीत हीड़ निर्गुनिया बरसाती बारता रेलो गीत भोपे/मोपे लावनी पिंगला झुरापो (MPPSC ME 2023)	रजवाड़ी आड़ाखड़ा डंडा मटकी गरबा नृत्य फुटी नृत्य अन्य नृत्य :- अंट्या (डांडिया नृत्य), द्विचकी, कान्ह-ग्वालिया, फुन्दी नृत्य, नकटौरा या टुटिया (विवाह), गैर (होली), झाला, छला, छतरी, भगोरिया नृत्य	माच भवई कठपुतली गवरी रामदंगल नकल	सवनाही संजा मांडना दिवासा चित्रावण राधौगढ़ (खींचीवाड़ा)
बघेलखण्ड	बसदेवा बिरहा फाग बाँस गीत सीदेव पंडवानी खेहुल पाटा बिदेसिया	परधौनी दादर केहरा बिरहा कलसा सुआ बीछी केमाली (साजन-सजना) दौगरा	मनसुखा (MPPSC Pre 2025) छाहुर हिंगोला जिंदबा/गौरैया/बहलोल लकड़बघ्घा	कोहबर (MPPSC Pre 2024) नेउरान नमे मोर मुराईला छाटी तिलंगा
बुंदेलखण्ड	आल्हा गायन भोला गीत बैरायट गायन देवारी गायन जगदेव का पुआरा चौकड़िया-फाग गीत हरदौल की मनौती	कानड़ा बधाई राई सैरा ढिमराई जबारा बरेदी अखाड़ा मौनिया नौरता	स्वांग (SFS Mains 2026) अखाड़ा नौटंकी खम्बस्वाँग रासलीला (रहस) MPPSC ARO 2024 रामलीला भड़ैती	सुरैती मोरते नौरता चौक मामूलिया गोदन-गोवर्धन

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्य प्रदेश की लोक संस्कृति

1. लोकगीत
2. लोक नृत्य
3. लोक नाट्य
4. लोक चित्रकला
5. लोक त्यौहार
6. लोक साहित्य

Tricks के लिए Scan करें

लोकगीत

बुंदेलखंड क्षेत्र के लोक गीत

आल्हा गायन | भोला गीत | जगदेव का पुआरा | देवारी गायन | बैरायट गायन | हरदौल की मनौती | चौकड़िया-फाग गीत

आल्हा गायन

- **अवसर** :- प्रायः वर्षा ऋतु में गाया जाता है।
- **गायन शैली** :- वीर रस युक्त ऊँचे स्वर में
- **विषयवस्तु** :- आल्हा गायन में आल्हाखंड(लेखक-जगनिक) में वर्णित आल्हा- उदल नामक दो भाइयों के विभिन्न युद्ध अभियानों की वीर गाथा गाई जाती है।
- बुंदेलखंड का अल्हैत समुदाय पारंपरिक रूप से आल्हा गायन का कार्य करता है।
- **वाद्य यंत्र** :- ढोलक + नगड़िया
- **प्रसिद्ध लोकगायक** :- संजो बघेल, देशराज पटैरिया, बच्चा सिंह एवं चंद्रभान।
- **उदाहरण :-**

  "जेंही दिन जन्म हुआ उदल का, धरती धँसी अढ़ाई हाथ।"

  "बुंदेलखंड की सुनो कहानी बुंदेलों की बानी में, पानीदार यहाँ का घोड़ा, आग यहाँ के पानी में।"

भोला गीत

- **अवसर** :- यह लोकगीत मकर संक्रांति, बसंत पंचमी, शिवरात्रि आदि महत्वपूर्ण अवसरों पर गाया जाता है।
- **विषयवस्तु** :- शिव भक्ति से संबंधित भजन।
- **अन्य नाम** :- बंबुलिया, लमटेरा।

देवारी गायन

- **क्षेत्र** :- बुंदेलखंड अंचल (वर्तमान में इस लोकगीत का गायन अन्य क्षेत्रों में भी किया जाता है)
- **अवसर** :- दीपावली के अवसर पर
- **समुदाय** :- इस लोकगीत को समानतः अहीर समुदाय (ग्वालबाला) के द्वारा सिर में मोर पंख लगाकर गाया जाता है।
- **विषयवस्तु** :- देवारी के दोहों में राधा-कृष्ण के प्रेम तथा श्रद्धा भक्ति से संबंधित अन्य भजनों का गायन किया जाता है।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्यप्रदेश में शिल्पकला

- हाथों से उपयोगी एवं सजावटी वस्तुओं के निर्माण की पारंपरिक कला को शिल्पकला कहा जाता है।
- मध्यप्रदेश की जनजातियों में हाथों से उपयोगी एवं सजावटी वस्तुओं के निर्माण की समृद्ध पारंपरिक शिल्पकला प्रचलित है।
- मध्यप्रदेश की जनजातीय शिल्पकला में हाथों का हुनर, प्रकृति से जुड़ाव और पीढ़ियों की सांस्कृतिक विरासत साकार होती है।

शिल्पकला एवं उनके क्षेत्र एक नजर में

शिल्पकला	क्षेत्र
ढोकरा कला	बैतूल
बेल मेटल वेयर	दतिया–टीकमगढ़
लौह शिल्प	डिंडोरी-मंडला
गुड़िया शिल्प	झाबुआ-ग्वालियर
धातु शिल्प	उचेहरा,सतना
सुपारी शिल्प	रीवा
चीचली धातु शिल्प	चीचली, नरसिंहपुर
बुधनी काष्ठ शिल्प	बुधनी, सीहोर
खराद कला	बुधनी, श्योपुर, मुरैना
ज़री जरदोजी शिल्प	भोपाल
भैरुगढ़ बाटिक प्रिंट	उज्जैन
बाघ प्रिंट	धार
नंदना प्रिंट	तारापुर, नीमच
छींट कला	सिरोंज, विदिशा जिला
साड़ी शिल्प	चंदेरी, महेश्वर, बारासिवनी (बालाघाट), सौंसर (छिंदवाड़ा)
पंजा दरी	आलीराजपुर, सीधी जिला
मोलेला कला	राजस्थान से लगे मध्य प्रदेश के जिले
कारी कला	टीकमगढ़
प्रस्तर शिल्प कला	भेड़ाघाट (जबलपुर), खजुराहो (छतरपुर), ग्वालियर, कटनी
पेपियर मैशे क्राफ्ट	उज्जैन, ग्वालियर

शिल्पकला	क्षेत्र
चर्म शिल्प	इंदौर, देवास
टेराकोटा शिल्प	मंडला, जबलपुर
कंघी शिल्प	उज्जैन, रतलाम, नीमच, मंदसौर
बाँस शिल्प	झाबुआ, मंडला, उमरिया, बैतूल
गुदना शिल्प	जनजातीय क्षेत्र
चित्रावण	मालवा

ढोकरा कला

- ढोकरा कला एक प्राचीन अलौह धातु शिल्प है, जो लॉस्ट वैक्स तकनीक (Lost Wax Casting) पर आधारित है।
- **समुदाय** :- बैतूल क्षेत्र की भारेवा जनजाति
- इस कला में मोम, मिट्टी और धातु का प्रयोग कर मूर्तियाँ, बर्तन और आभूषण बनाए जाते हैं।
- ढोकरा कला को **'घड़वा कला'** भी कहा जाता है।



- इसकी सबसे प्राचीन उदाहरण मोहनजोदड़ो से प्राप्त मानी जाती है।
- दिसम्बर 2025 में इसे GI टैग (बैतूल) प्राप्त हुआ।
- **प्रसिद्ध कलाकार** :- श्री बलदेव वाघमारे (राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार से सम्मानित)

31 मई 2025 को प्रधानमंत्री को मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने भारेवा धातु से बनी पुष्पक विमान की कलाकृति भेंट की थी।

बेल मेटल वेयर

- यह तांबा और टिन (लगभग 78% तांबा, 22% टिन) की मिश्र धातु से बनी एक प्राचीन भारतीय शिल्प कला है।
- यह कला मुख्य रूप से **'लॉस्ट वैक्स कास्टिंग'** पद्धति द्वारा बनाई जाती है, जिससे धार्मिक मूर्तियाँ, सजावटी वस्तुएँ और घंटियाँ बनाई जाती हैं।
- **GI टैग** :- 2008-09 (दतिया–टीकमगढ़)।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

लौह शिल्प



- **क्षेत्र** :- मंडला, डिंडोरी, बालाघाट।
- **जनजाति** :- अगरिया।
- गोंड जनजाति की उपजाति अगरिया जनजाति लौह शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है।
- डिंडोरी के लौह शिल्प को 2023 में जीआई टैग प्रदान किया गया।

गुड़िया शिल्प



- **क्षेत्र** :- ग्वालियर, झाबुआ।
- **जनजाति** :- भील।
- **विधि** :- नई-पुरानी रंगीन चिंदियों और कागज के टुकड़ों से गुड़िया बनाई जाती है।
- **प्रमुख कलाकार** :- बत्तो बाई (ग्वालियर), शांति परमार एवं रमेश परमार (झाबुआ, पद्मश्री 2023)।
- यह शिल्प GI टैग के लिए प्रस्तावित है।

सुपारी शिल्प

- **क्षेत्र** :- रीवा।
- सुपारियों पर कलाकारी कर मूर्तियाँ और छड़ियाँ बनाई जाती हैं।

उचेहरा धातु शिल्प

- **क्षेत्र** :- सतना।
- कांस्य धातु से बनी झांझ, थाली, बटलोही का निर्माण किया जाता है।
- **प्रसिद्ध कलाकार** :- शंकरलाल भोले (राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित)।

खराद कला

- यह मुख्य रूप से लकड़ी पर नक्काशी और उसे सुंदर आकार देने की काष्ठ कला है।
- इसमें लकड़ी को **'खराद'** पर चढ़ाकर घुमाया जाता है और तीखे औजारों से उसे छीलकर मनचाहा आकार दिया जाता है।
- **प्रमुख केंद्र** :- बुधनी, श्योपुर, मुरैना।

चीचली धातु शिल्प

- **केंद्र** :- चीचली, नरसिंहपुर।
- यहाँ पीतल और ताँबे के बर्तन एवं खिलौने बनाए जाते हैं।
- शिल्पकारों को **ठठेरा, कसेरा, ताम्रकार या तमेरा** कहा जाता है।

बुधनी काष्ठ शिल्प

- **केंद्र** :- बुधनी, सीहोर।
- शीशम, खैर व सरई की लकड़ियों से फर्नीचर, खिलौने और कृषि यंत्र बनाए जाते हैं।

ज़री जरदोजी शिल्प



- **स्थान** :- भोपाल।
- **उपयोग** :- इससे बटुए, बैग, साड़ियाँ, पर्स आदि आकर्षक रूप से सजाए जाते हैं।
- **विशेषता** :- पारंपरिक ज़री और जरदोजी कढ़ाई का कार्य।
- जरी-जरदोज़ी भोपाल जिले से ODOP में शामिल है।

छीपा शिल्प

- यह प्राचीन पारंपरिक **हस्त ब्लॉक प्रिंटिंग कला** है, जिसमें लकड़ी के ब्लॉकों (ठप्पों) का उपयोग कर प्राकृतिक रंगों से कपड़ों पर विभिन्न डिज़ाइन, फूलों और ज्यामितीय आकृतियाँ छापी जाती हैं।

मध्य प्रदेश के प्रमुख छीपा शिल्प



- भैरूगढ़ बाटिक प्रिंट (उज्जैन)।
- बाघ प्रिंट (धार)।
- नंदना प्रिंट (तारापुर,नीमच भील जनजाति)।
- छींट कला (सिरोंज, विदिशा जिला)।

- भैरूगढ़ बाटिक प्रिंट (उज्जैन) को वर्ष 2023 में GI टैग प्रदान किया गया। इस शिल्प में मोम का प्रयोग कर पैटर्न बनाया जाता है।
- चंदेरी साड़ियों को **'धूप-छांव'** भी कहा जाता है।






CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्यप्रदेश की कार्यपालिका

- कार्यपालिका सरकार का वह अंग है जो कानूनों एवं नीतियों को लागू करने तथा प्रशासन चलाने का कार्य करता है।

मध्यप्रदेश की कार्यपालिका

- स्थायी / प्रशासनिक कार्यपालिका
  - कार्यकाल निश्चित होता है।
    - जैसे - प्रशासनिक अधिकारी
- अस्थायी / राजनीतिक कार्यपालिका
  - कार्यकाल निश्चित नहीं होता है।
    - वास्तविक (मुख्यमंत्री की नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद)
    - नाममात्र (राज्यपाल)

राज्यपाल

- राज्पाल का उल्लेख भारतीय संविधान के भाग 6 के अध्याय-2 में अनुच्छेद-153 से 162 तक किया गया है।
- संविधान के अनुच्छेद 153 के अनुसार प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा। साथ ही 7वें संविधान संशोधन 1956 के तहत एक राज्यपाल एक साथ दो या दो से अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है। (AP 2024)
- अनुच्छेद 154 के अनुसार राज्य की कार्यपालिका शक्ति राज्यपाल में निहित होगी और वह इसका प्रयोग स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों द्वारा करेगा।
- सरल शब्दों में राज्य की कार्यपालिका का प्रमुख राज्यपाल होता है, जो मंत्रिपरिषद् की सलाह के अनुसार कार्य करता है। कुछ मामलों में राज्यपाल को विवेकाधिकार दिया गया है, ऐसे मामलों में वह मंत्रिपरिषद् की सलाह के बिना भी कार्य करता है। (ARO 2024)

राज्यपाल से संबंधित प्रमुख अनुच्छेद

अनुच्छेद - 153	राज्यों के राज्यपाल
अनुच्छेद - 154	राज्य की कार्यपालिका शक्ति।
अनुच्छेद - 155	राज्यपाल की नियुक्ति।
अनुच्छेद - 156	राज्यपाल की पदावधि।
अनुच्छेद - 157	राज्यपाल की नियुक्ति के लिए अर्हताएं।
अनुच्छेद - 158	राज्यपाल के पद के लिए शर्तें।
अनुच्छेद - 159	राज्यपाल द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान।
अनुच्छेद - 160	कुछ आकस्मिकताओं में राज्यपाल के कृत्यों का निर्वहन।
अनुच्छेद - 161	क्षमा आदि की और कुछ मामलों में दण्डादेश के निलंबन, परिहार या लघुकरण की राज्यपाल की शक्ति। (GE 2023, ARE 2022)
अनुच्छेद - 162	राज्य की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार।
अनुच्छेद - 163	राज्यपाल को सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रि-परिषद्। (SEE 2020)
अनुच्छेद - 167	राज्यपाल को जानकारी देने आदि के सम्बन्ध में मुख्यमंत्री के कर्तव्य।
अनुच्छेद - 174	राज्य के विधान मण्डल के सत्र, सत्रावसान और विघटन।
अनुच्छेद - 175	सदन या सदनों में अभिभाषण और उनको संदेश भेजने का राज्यपाल का अधिकार।
अनुच्छेद - 176	राज्यपाल का विशेष अभिभाषण।
अनुच्छेद - 200	विधेयकों पर अनुमति। (SMFE 2022)
अनुच्छेद - 201	राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित विधेयक।
अनुच्छेद - 213	विधान-मण्डल के विश्रांतिकाल में अध्यादेश जारी करने की राज्यपाल की शक्ति। (MPPSC 2018)
अनुच्छेद – 217	राष्ट्रपति द्वारा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति के मामले में राज्यपाल से सलाह लेना।
अनुच्छेद – 361	राष्ट्रपति और राज्यपाल को संवैधानिक प्रतिरक्षा प्रदान करता है (MPPSC 2024)

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्यप्रदेश के राज्यपाल एवं उनसे संबंधित तथ्य

डॉ. पट्टाभि सीतारमैया

(01/11/1956 से 13/06/1957)



- **जन्म** - 1880, आंध्रप्रदेश।
- **पूरा नाम** - भोगराजु पट्टाभि सीतारमैया।
- **समाचार पत्र** - जन्मभूमि (साप्ताहिक)

पुस्तकें

(1) नेशनल एजुकेशन - 1912
(2) इंडियन नेशनलिज्म - 1913
(3) री-डिस्ट्रिब्यूशन ऑफ इंडियन प्रोविंसेस ऑन ए लैंग्वेज बेसिस - 1916
(4) द इंडियन नेशनल कांग्रेस (जुबली कमेमोरेशन वॉल्यूम - 1935)
(5) इकोनॉमिक कॉन्क्वेस्ट ऑफ इंडिया
(6) कॉन्स्टिट्यूशन्स ऑफ द वर्ल्ड
(7) गांधी, गांधीइज़्म एंड सोशलिज़्म
(8) हिंदू होम री-डिस्कवर्ड इन 1936-37
(9) व्हाई वोट कांग्रेस?
(10) सिक्स्टी इयर्स ऑफ कांग्रेस
(11) फंडामेंटल्स ऑफ इंडियन पॉलिटिकल प्रॉब्लम्स
(12) फेदर्स एंड स्टोन्स
(13) हिस्ट्री ऑफ कांग्रेस, वॉल्यूम-II
(14) करंट हिस्ट्री इन क्वेश्चन एंड आंसर

- पूर्णकालिक राज्यपाल के रूप में सबसे छोटा कार्यकाल।
- 1939 में त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गाँधी ने पट्टाभि सीतारमैया का समर्थन किया, किंतु कांग्रेस के अध्यक्ष पद के चुनाव में उनकी सुभाषचंद्र बोस से हार हो गई।
- 1948 में भाषाई आधार पर भारतीय राज्यों के पुर्नगठन की व्यवहार्यता का अध्ययन करने हेतु गठित **जे.वी.पी. समिति के सदस्य** रहे।
- जयपुर अधिवेशन (1948-50) में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये।
- एक मात्र ऐसे राज्यपाल जिनकी **शपथ** (न्यायमूर्ति हिदायतुल्ला द्वारा) राजभवन में न होकर भोपाल के ऐतिहासिक **मिंटो हॉल** में हुई थी। (HE 2023)
- मध्य प्रदेश के गठन पूर्व 1952 से तत्कालीन मध्य प्रांत में गवर्नर की भूमिका में रहे।
- इनका प्रसिद्ध कथन **"राज्यपाल का कार्य मेहमानों की इज्जत करना उनको चाय भोजन और दावत देने के अलावा कुछ नहीं है** (PCE 2023)

श्री हरि विनायक पाटस्कर

(14/06/1957 से 10/02/1965)



- **जन्म** - 1892, पुणे
- 1963 में पद्म विभूषण से सम्मनित किया गया था।
- सर्वाधिक लंबे समय तक रहने वाले राज्यपाल (7 वर्ष 7 माह 27 दिन)
- विधि मंत्री के रूप में हिन्दू कोड बिल पारित करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।
- बंबई प्रांत से संविधान सभा के सदस्य चुने गए थे तथा उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता (अनुच्छेद 21-22) और निवारक निरोध जैसे गंभीर मुद्दों पर संविधान सभा की बहसों में सक्रिय रूप से भाग लिया था।
- इनके कार्यकाल के दौरान मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय का एक ऐतिहासिक फैसला (डॉ. एस.सी. भरत बनाम हरिविनायक पाटस्कर) आया। जिसमें एक यह व्यवस्था दी गई कि जब एक राज्यपाल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में कार्यकर्ता हैं तो उसे अनुच्छेद 361 के तहत मिलने वाली विशेष कानूनी छूट प्राप्त नहीं होती।

श्री के सी रेड्डी

(11/02/1965 से 07/03/1971)



- **जन्म** - 1902, कोलार (कर्नाटक)
- **पूरा नाम** - क्यसामवल्ली चेंगलाराया रेड्डी
- मैसूर से **संविधान सभा के सदस्य** रहे।
- मैसूर में **प्रजा पक्ष नामक पार्टी** की स्थापना की।
- नेहरू मंत्रिमंडल में केन्द्रीय आवास और आपूर्ति मंत्री तथा केन्द्रीय वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री रहे।
- वर्ष 1947-52 तक **मैसूर (कर्नाटक) राज्य के मुख्यमंत्री** रहे हैं।
- मध्यप्रदेश के **लगातार दो बार राज्यपाल** रहे हैं।
- इन्होंने **"जनवाणी"** पत्र का संपादन किया।






CHAMPION SQUARE
Be the champion with us for civil services

मुख्यमंत्री एवं मंत्रीपरिषद

मुख्यमंत्री

- भारतीय संविधान द्वारा सरकार की संसदीय प्रणाली को अपनाया गया है, जिसमें राज्यपाल राज्य का कार्यपालिका, जबकि मुख्यमंत्री वास्तविक प्रमुख होता है।

मुख्यमंत्री से संबंधित अनुच्छेद

अनुच्छेद	विषय वस्तु
163	मंत्रिपरिषद् द्वारा राज्यपाल को सहायता एवं सलाह हेतु राज्य की मंत्रिपरिषद होगी, जिसका प्रधान मुख्यमंत्री होगा।
164	मुख्यमंत्री तथा मंत्रिपरिषद की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा दी जाएगी।
166	राज्य सरकार द्वारा कार्यवाही संचालन।
167	राज्यपाल को सूचना प्रदान करने से संबंधित मुख्यमंत्री के दायित्व।

चयन तथा नियुक्ति

- मुख्यमंत्री के चयन और नियुक्ति के संबंध में, संविधान का अनुच्छेद 164 कहता है कि मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल करेगा।

(DSE 2024, AMO 2021)

- **संसदीय परंपरा** - संसदीय परंपरा के अनुसार, राज्यपाल उस व्यक्ति को मुख्यमंत्री नियुक्त करता है, जो विधानसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता होता है। यह व्यक्ति राज्यपाल से मिलकर सरकार बनाने का दावा करता है, जिसके बाद राज्यपाल उसे मुख्यमंत्री पद पर नियुक्त करता है।




- **बहुमत न होने की स्थिति** - अगर आम चुनाव में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिलता है, तो राज्यपाल अपने विवेक का प्रयोग करते हैं। वे विधानसभा में सबसे बड़े दल के नेता या किसी ऐसे व्यक्ति को मुख्यमंत्री पद पर नियुक्त करते हैं जिसे कई दलों का समर्थन प्राप्त हो। इसके बाद, उस व्यक्ति को एक माह के भीतर विधानसभा में अपना बहुमत साबित करना होता है।
- **वेतन** - 2.55 लाख

मुख्यमंत्री पद के लिए योग्यताएं

मुख्यमंत्री की योग्यता के संबंध में संविधान में कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है, लेकिन कुछ बिंदु तय किए गए हैं -

- **बहुमत प्राप्त दल का नेता** - मुख्यमंत्री को विधानसभा में बहुमत प्राप्त दल का नेता होना चाहिए। हालांकि, यह आवश्यक नहीं है कि वह विधानसभा का सदस्य ही हो। मुख्यमंत्री विधान परिषद का भी सदस्य हो सकता है।
- **सदस्यता की अनिवार्यता** - अगर किसी व्यक्ति को मुख्यमंत्री नियुक्त किया जाता है, जो किसी भी सदन का सदस्य नहीं है, तो उसे 6 माह के भीतर विधानमंडल के किसी सदन का सदस्य बनना अनिवार्य है। अगर वह ऐसा नहीं करता, तो 6 माह बाद वह मुख्यमंत्री पद के योग्य नहीं रहेगा।

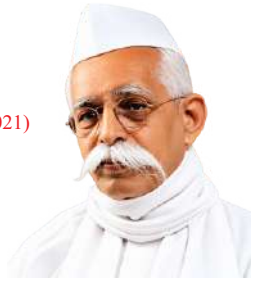
नोट

मुख्यमंत्री सदन का नेता होता है, लेकिन 4थी विधानसभा में सदन की नेता **विजयाराजे सिंधिया** रही, जबकि मुख्यमंत्री गोविंद नारायण सिंह थे।



CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

पं. रविशंकर शुक्ल



- **जन्म** – 2 अगस्त 1877, सागर (HPHM 2021)
- **मृत्यु** - 31 दिसम्बर 1956, दिल्ली
- ये संविधान सभा के सदस्य रहे।
- नवगठित मध्य प्रदेश के **प्रथम मुख्य मंत्री**। (तत्कालीन सरायपाली सीट, वर्तमान छत्तीसगढ़)
- **कार्यकाल** - 01/11/1956 से 31/12/1956 (2 महीने)
- मध्य प्रदेश के गठन के पूर्व 1946 से 1950 तक सी.पी. एंड बरार के मुख्यमंत्री रहे।
- 1950 से 31 अक्टूबर 1956 तक वे पार्ट-A राज्य के मुख्यमंत्री रहे।
- 1935 में नागपुर से महाकौशल सप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया।
- सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा के विकास हेतु 1937 में विद्या मंदिर योजना शुरू की।
- स्वतंत्रता के बाद मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की रियासतों को भारतीय संघ में मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1964 में इनके नाम पर रायपुर (छत्तीसगढ़) में विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- जबलपुर स्टेडियम का नाम पं. रविशंकर शुक्ल के नाम पर रखा गया है।
- रविशंकर शुक्ल की कार्यकाल के दौरान मृत्यु हुई थी।
- मध्यप्रदेश में इन्हें **"पुरोधा"** के नाम से जाना जाता है।

भगवंतराव मण्डलोई



- **जन्म** – खंडवा
- **कार्यकाल** - 09/01/1957 से 30/01/1957 (कार्यवाहक), 12/03/1962 से 29/09/1963 (नियमित)

प्रथम मुख्यमंत्री रविशंकर शुक्ल के आकस्मिक निधन के बाद भगवान भगवत राव मंडलोई को द्वितीय मुख्यमंत्री बनाया गया था (HE 2023)

- ये नवगठित मध्य प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री थे जिन्होंने अपना पाँच वर्ष का कार्यकाल पूर्ण किया।
- भगवंतराव मण्डलोई **दो बार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री** रहे।
- 1963 में कांग्रेस की **कामराज योजना** (इसके तहत वरिष्ठ नेताओं को सरकार छोड़कर संगठन का काम करना था) के तहत मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया।
- यह **संविधान सभा के सदस्य** रहे।
- 1970 में पद्मभूषण मिला।

श्री कैलाशनाथ काटजू



- **जन्म** - जावरा, रतलाम
- ये **दो बार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री** रहे।
- **कार्यकाल** - 31/01/1957 से 14/04/1957 तथा 15/04/1957 से 11/03/1962
- ओडिशा तथा पं. बंगाल के राज्यपाल रहे।
- ये पेशे से वकील थे इन्होंने आजाद हिंद फौज के लाल किले के मुकदमें में तथा मेरठ षड्यंत्र केष में भाग लिया।
- एक मात्र ऐसे व्यक्ति जिन्होंने केन्द्रीय कानून मंत्री, केन्द्रीय गृहमंत्री, केन्द्रीय रक्षा मंत्री जैसे महत्पूर्ण पदों को सुशोभित किया।
- **पुस्तकें** - एक्सपेरिमेंट इन एडवोकेसी, ए कोलोसस इन द कोर्ट ऑफ जस्टिस, द डेज आई रिमेम्बर।
- नेशनल हेराल्ड के संस्थापकों में से एक।

द्वारकाप्रसाद मिश्र



- **जन्म** - पंदारी, उन्नाव (उत्तरप्रदेश)
- **कार्यकाल** - 30/09/1963 से 08/03/1967 तथा 08/03/1967 से 29/07/1967
- ये संविधान सभा के सदस्य रहे।
- मध्यप्रदेश के पहले मुख्यमंत्री जिनका जन्म मध्यप्रदेश के बाहर हुआ।
- मध्यप्रदेश में **"राजनीति के चाणक्य"** के नाम से प्रसिद्ध है।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

- वर्ष 2020 में चौथी बार शपथ लेने वाले प्रदेश के एकमात्र मुख्यमंत्री है।
- इन्होंने 30 दिनों तक मंत्रिपरिषद के बिना कार्य किया।
- मध्यप्रदेश के सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री रहने का रिकॉर्ड इन्ही के नाम है।
- सलकनपुर की बीजासन माता इनकी आराध्य देवी है।
- **पुस्तक** - 'बढ़ता मध्यप्रदेश'।

श्री कमलनाथ



- **जन्म** - कानपुर, उत्तरप्रदेश
- **कार्यकाल** - (17/12/2018 से 20/03/2020)
- राजनीति में इन्हें **"युवा तुर्क"** के नाम से जाना जाता है।
- ये छिन्दवाड़ा लोकसभा क्षेत्र से **9 बार लगातार सांसद** रहे।
- 2018 से 2020 तक मध्यप्रदेश के 31वें क्रम के मुख्यमंत्री रहें।
- मध्यप्रदेश में विपक्ष के नेता भी रह चुके हैं।
- **'इंडिया सेंचुरी'** इनकी प्रमुख पुस्तक है।

डॉ. मोहन यादव



- **जन्म** - उज्जैन
- **कार्यकाल** - (13/12/2023 से निरंतर)
- **विधानसभा क्षेत्र** - उज्जैन दक्षिण
- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से राजनीतिक शुरूआत की।
- 2011 से 2013 तक मध्यप्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष रहे।
- उज्जैन के समग्र विकास हेतु अप्रवासी भारतीय संगठन शिकागों द्वारा महात्मा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित।
- 2 जुलाई 2020 से 11 दिसम्बर 2023 तक मध्यप्रदेश राज्य के उच्च शिक्षा विभाग मंत्री रहे।
- 13 दिसम्बर 2023 को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की।

मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री

क्र.	नाम	विधानसभा क्षेत्र	कार्यकाल	तात्कालीन मुख्यमंत्री	राजनीतिक दल
1	वीरेंद्र कुमार सखलेचा	जावद	30 जुलाई 1967 - 12 मार्च 1969	गोविंद नारायण सिंह	भारतीय जनसंघ
2	शिव भानु सिंह सोलंकी	धार	1980 के दशक में	अर्जुन सिंह	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
3	सुभाष यादव	कसरावद	14 दिसंबर 1993 - 30 नवंबर 1998	दिग्विजय सिंह	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
4	जमुना देवी	कुक्षी	1 दिसंबर 1998 - 8 दिसंबर 2003	दिग्विजय सिंह	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
5	राजेंद्र शुक्ल	रीवा	13 दिसंबर 2023 - वर्तमान	डॉ. मोहन यादव	भारतीय जनता पार्टी
6	जगदीश देवड़ा	मल्हारगढ़	13 दिसंबर 2023 - वर्तमान	डॉ. मोहन यादव	भारतीय जनता पार्टी

नेता प्रतिपक्ष जो मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे

क्र.	नेता का नाम	मुख्यमंत्री का कार्यकाल	नेता प्रतिपक्ष का कार्यकाल	राजनीतिक दल
1	वीरेंद्र कुमार सखलेचा	1978–1980	1962–1967, 1967, 1969–1970	भारतीय जनसंघ / जनता पार्टी
2	श्यामाचरण शुक्ल	1969–1972, 1975–1977, 1989–1990	1967–1968, 1990–1992	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
3	पं. द्वारका प्रसाद मिश्र	1963–1967	1968–1969	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
4	कैलाश चंद्र जोशी	1977–1978	1972–1977, 1985–1990	भारतीय जनसंघ / भाजपा
5	अर्जुन सिंह	1980–1985, 1988–1989	1977–1980	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
6	सुंदरलाल पटवा	1980, 1990–1992	1980–1985	भारतीय जनता पार्टी
7	बाबूलाल गौर	2004–2005	2002–2003	भारतीय जनता पार्टी






CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्यप्रदेश में पर्यटन

मध्यप्रदेश में पर्यटन

सांस्कृतिक पर्यटन
- विश्व धरोहर स्थल
- किलें एवं महल
- समाधियाँ एवं मकबरे

धार्मिक पर्यटन
मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, चर्च

पुरातात्विक पर्यटन
पुरातात्विक स्थल एवं गुफाएँ

प्राकृतिक पर्यटन
- पंचमढ़ी, अमरकंटक
- भेड़ाघाट, झीलें
- जलप्रपात, नदीद्वीप

सांस्कृतिक पर्यटन

विश्व धरोहर स्थल

- विश्व धरोहर स्थल यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थान हैं, जिनका **"उत्कृष्ट सार्वभौमिक मूल्य"** (Outstanding Universal Value) होता है और जो पूरी मानवता के लिए महत्वपूर्ण होते हैं।
- ये स्थल सांस्कृतिक (मानव निर्मित) या प्राकृतिक हो सकते हैं, और कुछ स्थल दोनों श्रेणियों में आते हैं (मिश्रित)।
- मध्य प्रदेश में तीन स्थाई विश्व धरोरल स्थल सांस्कृतिक श्रेणी के हैं। (अस्थाई धरोहर स्थल :- 15)
- **भारत के पहले विश्व धरोहर स्थल** :- अजंता गुफाएं, एलोरा गुफाएं, आगरा का किला और ताज महल (1983)
- **मध्यप्रदेश का पहला विश्व धरोहर स्थल** :- खजुराहो (1986)

  मध्यप्रदेश के अन्य विश्व धरोहर स्थल :- साँची (1989) और भीमबेटका (2003)

UNESCO

- **पूर्ण रूप** :- United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization
- **स्थापना** :- 16 नवम्बर 1945
- यह संयुक्त राष्ट्र संघ की विशेष एजेंसी है।
- **मुख्यालय** :- पेरिस, फ्रान्स।

UNESCO
United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization

मध्य प्रदेश में विश्व धरोहर स्थल

अस्थाई - 19
- मांडू में स्मारकों का समूह
- सतपुड़ा टाइगर रिजर्व
- चौसठ योगिनी मंदिर
- गुप्तकालीन मंदिर
- चंदेरी
- ग्वालियर किला
- ओरछा का ऐतिहासिक समूह
- बुरहानपुर का खुनी भंडारा
- चंबल घाटी के शैल कला स्थल
- भोजपुर का भोजेश्वर महादेव मंदिर
- नर्मदा घाटी में भेड़ाघाट-लमेटाघाट
- मंडला स्थित रामनगर के गोंड स्मारक
- धमनार का ऐतिहासिक समूह
- सम्राट अशोक के शिलालेख
- बुंदेला शासकों के महल और किले
- बाघ की गुफाएँ
- उदयगिरी की गुफाएँ
- बटेश्वर, पदावली एवं ककनमठ मंदिर
- गिन्नौरगढ़ दुर्ग

स्थाई - 03
- खजुराहो
- साँची
- भीमबेटका



CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्य प्रदेश में स्थायी विश्व धरोहर स्थल

- खजुराहो
- सांची
- भीमबेटका





खजुराहो

- **अवस्थिति :-** राजनगर तहसील, छतरपुर जिला
- **प्राचीन नाम :-** खजूरवाहिका,खजूरपुरा
- **खजुराहो के अन्य नाम :-** पत्थर पर तराशी गई नगरी, मंदिर स्थापत्य का तीर्थ
- **खोजकर्ता :-** कैप्टन टी.एस. बर्ट, 1838
- खजुराहो चंदेलों की प्रारंभिक राजधानी थी। बाद में राजधानी कालिंजर/ महोबा (उ.प्र.) बनी, जबकि खजुराहो सांस्कृतिक राजधानी की मान्यता लिए रहा।
- खजुराहो में चंदेल वंश के शासकों के द्वारा 950 ई. से 1050 ई. के मध्य 85 मंदिरों का निर्माण कराया गया था हालांकि वर्तमान में केवल 22 से 25 मंदिर अस्तित्व में है उनमें से भी केवल मतंगेश्वर महादेव मंदिर में ही वर्तमान में पूजा की जाती है।
- **"Times of India"** ग्रुप ने सार्वजनिक मतदान अभियान के जरिये वर्ष 2007-2008 में भारत के 7 अजूबों की एक सूची जारी की,जिसमे खजुराहो को भी शामिल किया गया।
- मोरक्को यात्री इब्नबतूता ने अपने यात्रा वृत्तांत(रिह्ला) एवं लेखों में खजुराहो के मंदिरों का उल्लेख किया है।

खजुराहो के मंदिरों की विशेषताएँ

- इन मंदिरों का निर्माण **नागर एवं पंचायतन मंदिर स्थापत्य शैली** में किया गया है।
- मूर्तियों का निर्माण मथुरा शैली में प्रमुख रूप से किया गया है।
- मंदिर के बाहरी भाग में कामुकता एवं सौंदर्य से संबंधित मूर्तियाँ स्थापित हैं।
- खजुराहो के मंदिर जैन,शैव एवं वैष्णव आदि पंथ से संबंधित है।
- खजुराहो के मंदिरों के निर्माण में लाल बलुआ पत्थर एवं ग्रेनाइट पत्थर का उपयोग किया गया है।

खजुराहो के मंदिर

- पश्चिमी समूह
- पूर्वी समूह
- दक्षिणी समूह

पश्चिमी समूह

कंदरिया मंदिर

- पश्चिमी मंदिर समूह का सबसे विशाल मंदिर
- भगवान शिव को समर्पित
- **निर्माता :-** चंदेल शासक विद्याधर
- गर्भगृह में संगमरमर का शिवलिंग है जो भगवान **अमरनाथ के शिवलिंग का प्रतीक** है।
- **तुलना :-** भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर से।
- इस मंदिर में **भगवान नंदी** की मध्य प्रदेश की सबसे ऊंची प्रतिमा स्थापित है।

मतंगेश्वर मंदिर

- **निर्माता :-** चंदेल शासक हर्ष वर्मन
- भगवान शिव (मतंगेश्वर) को समर्पित
- इस मंदिर में **"भटकत"** मणि/मरकत मणि नामक मणि की स्थापना की गई थी।
- खजुराहो के **चंदेल काल का एकमात्र मंदिर** जिसमें वर्तमान में भी पूजा होती है।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

लक्ष्मण मंदिर

- **निर्माता** :- चंदेल शासक यशोवर्मन (चंदेल शासक धंगदेव के पिता)
- **भगवान विष्णु को समर्पित** :- भगवान विष्णु को बैकुंठधाम में दिखाया गया है।
- यह मंदिर **पंचायतन स्थापत्य शैली** में निर्मित है।

विश्वनाथ मंदिर

- **निर्माता** :- चंदेल शासक धंगदेव(यशोवर्मन का उत्तराधिकारी)
- महादेव को समर्पित
- **अन्य नाम** :- नंदी मंदिर
- यह मंदिर **पंचायतन स्थापत्य शैली** में निर्मित है।

चौसठ योगिनी मंदिर

- खजुराहो का सबसे प्राचीन मंदिर (885 ई)
- यह मंदिर दुर्गा देवी के विभिन्न रूपों को समर्पित है। यहां तंत्र विद्या की आराधना की जाती है।
- सामान्यता **चौसठ योगिनी मंदिर गोलाकार** होते है किंतु खजुराहो का चौसठ योगिनी मंदिर आयताकार है।
- इस मंदिर के निकट **शिव सागर नामक झील** अवस्थित है।

चित्रगुप्त मंदिर

- **निर्माता** :- चंदेल शासक गंड देव
- यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है भगवान सूर्य की प्रतिमा के दाएं और चित्रगुप्त की प्रतिमा भी स्थापित है।
- इस मंदिर में भगवान सूर्य के रथ को सात घोड़े द्वारा खींचते हुए दिखाया गया है।

खजुराहो के मंदिर एवं उनके निर्माता एक नजर में

मंदिर	निर्माता
कंदरिया मंदिर	विद्याधर
मतंगेश्वर मंदिर	हर्ष वर्मन
लक्ष्मण मंदिर	यशोवर्मन
विश्वनाथ मंदिर	धंगदेव
चित्रगुप्त मंदिर	गंड देव
पार्श्वनाथ मंदिर	राजा धंग

पूर्वी समूह

- पूर्वी समूह के मंदिर **जैन धर्म** से संबंधित हैं।
- **खजुराहो के पूर्वी समूह के प्रमुख मंदिर** :- आदिनाथ मंदिर, घटाई मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर, वामन मंदिर, जावरी मंदिर (विष्णु मंदिर), ब्रम्हगिरि मंदिर

घटाई मंदिर



- इस मंदिर में महावीर की माता के 16 सपनों को दर्शाया गया है।
- वर्तमान में यह मंदिर पूरी तरह से खंडित अवस्था में है।

पार्श्वनाथ मंदिर



- यह मंदिर **पंचरथ शैली** में निर्मित है।
- इस मंदिर का **निर्माण राजा धंग** (यशोवर्मन का उत्तराधिकारी) के शासनकाल में हुआ था।

दक्षिणी समूह

- दक्षिण समूह के मंदिर मुख्यतः **हिंदू धर्म** से संबंधित है|
- **प्रमुख मंदिर** :- चतुर्भुज मंदिर (निर्माता :- यशोवर्मन), वैद्यनाथ मंदिर (निर्माता :- धंगदेव)

दुल्हादेव मंदिर



- **सहस्त्र मुखी शिवलिंग** को समर्पित
- **अन्य नाम** :- कुंवर मठ
- चंदेल कालीन मंदिरों में सबसे नया

नंटू फैक्ट्स

- खजुराहो में प्रतिवर्ष खजुराहो नृत्य समारोह आयोजित किया जाता है, जिसकी शुरुआत 1975 में हुई थी।
- खजुराहो में जनजातीय संस्कृति पर आधारित आदिवर्त संग्रहालय स्थित है।





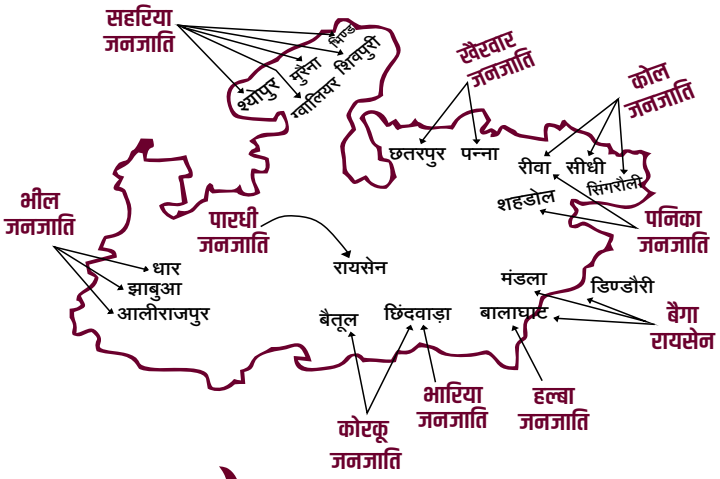

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ

- मध्यप्रदेश देश में **सर्वाधिक अनुसूचित जनजातीय जनसंख्या वाला राज्य** है।
- यहाँ अनेक जनजातियाँ अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपराओं एवं जीवन-शैली के साथ निवास करती हैं।
- 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ **1.53 करोड़ जनजातीय जनसंख्या निवास** करती है, जो राज्य की कुल **जनसंख्या का 21.1%** है।
- अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या प्रतिशत की दृष्टि से मध्य प्रदेश का **देश में 13 वां स्थान** है। (**प्रथम** :- मिज़ोरम)

मध्यप्रदेश की जनजातियाँ

प्रमुख जनजातियाँ	अत्यंत पिछड़ी जनजातियाँ	अन्य जनजातियाँ
भील, गोंड, कोल, कोरकू	बैगा, सहरिया भारिया	पारधी, पनिका उराव, खैरवार मुड़िया



भील जनजाति

अर्थ

- भील नाम द्रविड भाषा के **बील (धनुष)** तथा संस्कृत भाषा के **भिल्ल (भेदना)** शब्द से लिया गया है। (MPPSC-2017)
- धनुष कौशल में निपुण होने के कारण इन्हें भील नाम दिया गया।
- भील जनजातियों का समुदाय मूल रूप से **'शिकारी'** और **'योद्धा समुदाय'** है।
- भील जनजाति एकलव्य को अपना आदर्श मानते हैं, इसलिए तीर चलाते समय अंगूठे का प्रयोग नहीं करते।
- प्राचीन ग्रंथों एवं पुराणों में निषाद शब्द सामान्यत: भीलों के लिए प्रयुक्त हुआ है।

उत्पत्ति

- एक दन्त कथा के अनुसार भील स्वयं को **महादेव का वंशज** मानते है।
- सर्वप्रथम **'कथासरित्सागर'** (रचियता-सोमदेव) में **'भील'** शब्द का प्रयोग किया गया है तथा इन्हें विंध्य क्षेत्र का निवासी बताया गया है।
- ऋग्वेद में भीलों के लिए **'अनार्य'** या **'अनास'** शब्द प्रयुक्त किया गया है।
- हर्बट रिज़ले ने 200 भीलों के मानवशास्त्री अध्ययन के आधार पर भीलों को द्रविड माना है।
- डॉ मजूमदार ने अपनी पुस्तक **'रेसेज एंड कल्चरल ऑफ इंडिया'** में भील जनजाति का संबंध प्राचीन नीग्रेटो प्रजाति से बताया है।
- वेंकटाचार्य ने इन्हें रक्त में **'आर्यों का रक्त'** की संज्ञा दी है।
- भील जनजाति का विस्तृत वर्णन **टी.बी. नायक** ने अपनी पुस्तक द **भील्स अ स्टडी** (The Bhils a Study)' में किया है। इसी किताब में उन्होंने बताया है कि भीलों का उद्धार श्रीराम ने किया।
- ज्यादातर मानवशास्त्री भील जनजाति को **'प्रोटो आस्ट्रेलियाड'** मानव प्रजाति से संबंधित मानते हैं।
- एस.एल.वर्मा की बुक **'भीलो की सामाजिक व्यवस्था'** में इन्हें जंगल देव की संतान माना गया है।
- निशांत निमाकर अनुसार, भील लड़ाकू जनजाति है।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

- माता शबरी, महर्षि वाल्मीकि (मूल नाम- वालिया) एवं महाभारत कालीन **एकलव्य भील जनजाति** से संबंधित हैं।
- **नोट -** कोल जनजाति स्वयं को माता-**शबरी का वंशज** मानती है।

नोट

- इतिहासकार कर्नल टॉड ने भीलों को **'वन पुत्र'** पुलिंद तथा टॉलमी ने **'तीरंदाज'** कहा है।
- भीलों का मूल स्थान राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के **कुशलगढ़ क्षेत्र के ढोलका** को माना गया है।

गोत्र एवं टोटम

- श्री वसंत निर्गुण के सर्वेक्षण के आधार पर भील जनजाति में **71 गोत्र** प्रकाश में आए हैं।
- भीलों में **71 गोत्रों** व **48 टोटमिक गोत्रों** की मान्यता है।

भीलों में 48 टोटमिक गोत्रों का वर्गीकरण -

- पेड़-पौधों से संबंधित - **17 गोत्र**
- पशु-पक्षियों से संबंधित - **19 गोत्र**
- वस्तुओं से संबंधित - **12 गोत्र**

भील 4 वर्गों एवं 2 उपवर्गों में विभाजित है, प्रत्येक वर्ग में कई उपजातियाँ पायी जाती है।

- **वर्ग -** भील, भिलाला, पटलिया, रांठ
- **उपवर्ग -** धानुका, नायकड़ा

- भीलों में सामाजिक संगठन के 4 रूप है- **अतक, ओदख, गोत्र, कुल।**
- अतक-ओदख रिवाज अनुसार सगोत्री विवाह वर्जित होता है।

टोटमवाद

- सर्वप्रथम टोटमवाद शब्द का प्रयोग जे. लांग द्वारा किया गया एवं इसकी विस्तृत व्याख्या दुर्खीम द्वारा की गई।
- आदिवासी मान्यता अनुसार टोटम में अलौकिक शक्ति का निवास है, जो उनके जीवन को नियंत्रित करती है।
- जनजातीय समाज पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों या पर्वतों जैसी प्राकृतिक वस्तुओं में अलौकिक शक्ति की उपस्थिति मानता है।
- इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों को टोटम नाम देते हुए इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा रखी जाती है।

भौगोलिक विस्तार

- **राज्य** :- मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र
- **जिले** :- पश्चिमी पर्वतीय वन खंडों में सर्वाधिक विस्तार (झाबुआ, खरगोन, धार, बड़वानी, आलीराजपुर और रतलाम)
- इन क्षेत्रों में **भिलाला, पटेलिया, रांठ** भी निवासरत है।

जनसंख्या

- वर्तमान में मध्यप्रदेश की जनजाति जनसंख्या में भीलों की संख्या सर्वाधिक है। (MPPSC- 2012, 2020)
- यह मध्यप्रदेश की सबसे बड़ी तथा भारत की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है।
- जनगणना 2011 के अनुसार मध्यप्रदेश में भीलों की संख्या 59,93,921 है।
- भील मध्यप्रदेश की कुल जनजाति जनसंख्या का **39.08 प्रतिशत** है।
- भीलों की सर्वाधिक जनसंख्या लगभग (12 लाख से अधिक) धार जिले में है।
- बड़वानी, खरगौन और झाबुआ में 5 लाख से अधिक भील निवासरत है।

नोट

- भारत की सबसे बड़ी जनजाति गोंड एवं क्षेत्रफल आधार पर मध्य प्रदेश की **सबसे बड़ी जनजाति** गोंड है।

उपजातियाँ

- **प्रमुख उपजातियाँ** :- भिलाला, तड़वी, उजला, मदवी, पुजारो, कोटवार, भीली, पटेलिया, बरेला, रांठ/राठिया, रथियास, बैगास।

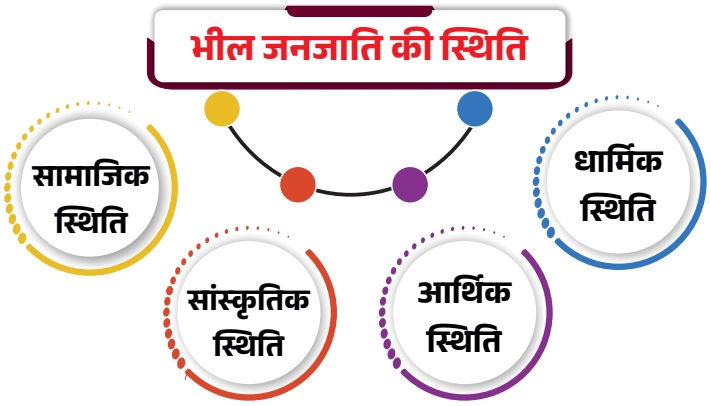
भिलाला / उजला भील -

- यह **भीलों की सबसे बड़ी उपजाति** है।
- यह स्वयं को **महाराणा प्रताप के वंशज** मानते हैं।
- भिलाला का मूल स्थान छत्तीसगढ़ राज्य को माना जाता है।
- **गोत्र** :- सन्यान (बिल्ली पूजक), निंगवाल्या (मछली पूजक), सिंगाड़या (बैल पूजक), अन्य - जमानया, मछरिया।

CHAMPION SQUARE
Be the champion with us
for civil services

- **उमड़ी/तड़वी** :- औरंगजेब के समय जिन भीलों ने **इस्लाम धर्म** अपना लिया। इन भीलों की स्थिति सबसे दयनीय है।
- **कमार** :- यह भीलों की सबसे छोटी उपजाति है।
- **उपवर्ग** :- धानुका, नायकड़ा।

- **उजला भील** को **पूर्ण भील** कहा जाता है, जबकि **कोटरा भील** को **अर्द्ध भील** कहा जाता है।
- **रतनमाल** :- वे भील जो पिछली सात पीढियों से एक साथ रह रहे हों।
- **'पालवी'** :- ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले भील।
- **'वागड़ी'** :- मैदान में रहने वाले भील।



सामाजिक स्थिति

- **परिवार** :- भीलों में मुख्यत: पितृसत्तात्मक-संयुक्त परिवार पाए जाते हैं।
- **विवाह** :- भील जनजाति में सगोत्र विवाह वर्जित है। (लाडो/हरण - दूल्हा, लाड़ी - दुल्हन)

प्रमुख विवाह -

- **भगोरिया विवाह** :- प्रेम विवाह
- **घर-घुसी विवाह** :- घुसपैठिया विवाह
- **मिही बम्बू** :- हरण विवाह
- **नातरा विवाह** :- विधवा पुनर्विवाह
- **भरायण विवाह** :- गरीबी के कारण सामाजिक सहयोग से किया जाने वाला विवाह।
- **खंदड़िया** :- एक प्रकार का सेवा विवाह जिसमें दूल्हा ससुराल में सेवा करता है।

विवाह से जुड़ी अन्य शब्दावलियाँ -

- **छांक** :- बरात के स्वागत के लिए ले जाया जाने वाला ताड़ी/मदिरा
- **हल्दी-पीठी** :- कुल देवताओं को विवाह का निमंत्रण
- **बाना-बिठाना** :- वर एवं वधू को नए वस्त्र पहनाना
- **पहरावणी** :- मामा द्वारा वर एवं वधू के लिए वस्त्र लाने की रस्म।
- **लागुड़ा-लाड़ी प्रथा** :- संबंध तय होने पर वर पक्ष द्वारा वधू के लिए नवीन वस्त्र ले जाने की प्रथा।
- **हाथी वेडो प्रथा** :- वर एवं वधू द्वारा पीपल या सागवान वृक्ष के फेरे लेना
- **ओगी** :- भील जनजाति के विवाह में गांव व संबंधियों द्वारा दिए गए जैवर या रूपये देने की परंपरा।
- **चोखा खेलना** :- विवाह में नाचते-नाचते वर-वधू एक दूसरे पर चावल फेंकते हैं।

दापा प्रथा

- विवाह में दहेज अथवा वधूमूल्य को **'दापा'** कहा जाता है। (मुख्य रूप से भिलाला में)
- **रूप** :- खाड़ा (मवेशी देना), साँवा (अनाज देना), साउन्ग (ससुर को अनाज देना)
- इस प्रथा में वर पक्ष की ओर से वधू पक्ष को दहेज दिया जाता है।
- भांजगड़िया (विवाह में मध्यस्थता करने वाला व्यक्ति) दापा तय करने की तिथि निर्धारित करता है।
- **सांवा** :- दापा प्रथा में वधू पक्ष को दिया जाने वाला अनाज।
- इस कुप्रथा को समाप्त करने हेतु अक्टूबर, 2016 से साथीदार अभियान प्रारंभ किया गया है।

वस्त्र एवं आभूषण

- भील संसार की सबसे अधिक **श्रृंगारप्रिय** और **रंगप्रिय** जनजाति है।
- यह जनजाति **नंदना प्रिंट के कपड़े का प्रयोग** सर्वाधिक करती है।